CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वर्ष ९ : अंक २-३
फरवरी-मई १९९८

९८-९९

सम्पादक
पाण्डेय कपिल

एह विशेषांक के
सहयोगी सम्पादक
गोपाल अश्क

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

नेपालीय भोजपुरी विशेषांक

परामर्श-मंडल
श्री ईश्वरचन्द्र सिनहा : डॉ० विवेक राय
आचार्य विश्वनाथ सिंह : डॉ० विद्यानिवास मिश्र
श्री मोती बी० ए० : दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती
श्री भोलानाथ गहमरी : श्री पाण्डेय कपिल

सम्पादक-मण्डल
प्रो० ब्रजकिशोर : डॉ० रसिकबिहारी ओझा 'निर्भीक' : जगन्नाथ
डॉ० शम्भुशरण : नागेन्द्र प्रसाद सिंह : पाण्डेय आशुतोष
कृष्णानन्द कृष्ण : डॉ० ब्रजभूषण मिश्र : भगवती प्रसाद द्विवेदी

एह अंक के प्रायोजक
कृष्णमुरारी रौनियार : विश्वम्भर कुमार शर्मा : दिनेश नेपाली
(बीरगंज, नेपाल)

एह विशेषांक के दाम
दस रुपया

इन्द्रपुरी, पटना-८०० ०२४
दूरभाष : ०६१२-२६११३४

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एह विशेषांक में

कथनी सम्पादक कै - नेपाली आ भोजपुरी :

स्वर्गीय प्रो० शिवनाथ चौबे- पाण्डेय कपिल -- १

निबन्ध -- नेपाल में भोजपुरी भाषा के स्थिति

- प्रा० विश्वम्भर कु० शर्मा -- ३

नेपालीय भोजपुरी काव्य-साहित्य

-गोपाल अश्क - - - - - - ७

नेपालीय भोजपुरी गद्य-साहित्य

-चन्द्रकिशोर झा -- - - - - १४

नेपालीय भोजपुरी साहित्य के इतिहास

- आशनारायण प्रसाद 'अशोक' - १७

कविता -- गोपाल ठाकुर / हमहूँ नेपाली हई / खबरदार -- २९

चन्द्रकिशोर झा / गाँव / चदरिया झीनी रे झीनी - ३१

उमाशंकर द्विवेदी 'दधीचि' / बाद के बात - - - ३३

(श्रीमती) गजल झा / सोना के हसुली / आपन वसंत- ३३

धर्मेन्द्र भट्टराई / धर्म / राजनीति आ राजनीतिज्ञ --- ३५

विश्वम्भर कु० शर्मा / जिन्दगी / देवता - - - - - - ३६

मुकुन्द आचार्य / बधाई बा / मारीं गोबर में लात --- ३८

पुरुषोत्तम शर्मा / नेपाल के विकास में महक उठीं महक उठीं - ३९

आशनारायण प्र० अशोक / सावन गीत / गजल --- ४०

उमेशचन्द्र ठाकुर / नीक नोहर / मूक साक्षी - - - - ४२

दिनेश नेपाली / गजल -- -- -- - - - - - - - - ४३

दीपनारायण मिश्र / ईमानदारी - - - - - - - - - - ४४

गोपाल अश्क / शहीद के विधवा / टाट के आर-पार -- ४६

विशेष -- नेपालीय भोजपुरी लेखक / प्रस्तुतिः गोपाल अश्क - - - २५

पत्रिका शुल्क दर

एक वर्ष ५५ रुपया / सम्मेलन के सदस्य खातिर ४५ रुपया

प्रायोजक शुल्क (आजीवन ग्राहक शुल्क) ७५० रुपया

सम्मेलन-सदस्यता शुल्क दर

वार्षिक १५ रुपया / आजीवन २५१ रुपया

शुल्क नीचे लिखत पता पर भेजीं -

महामंत्री, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, इन्द्रपुरी, पटना-८०००२४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

(अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के मासिक पत्रिका)

इन्द्रपुरी, पटना - ८०००२४

नेपालीय भोजपुरी विशेषांक

वर्ष-९ फरवरी-मार्च, १९९८ अंक २-३

कथनी सम्पादक के

नेपाल आ भोजपुरी

दिनांक ८ मार्च १९९८ के हमरा नेपाल भोजपुरी प्रतिष्ठान के वार्षिकोत्सव में शामिल होखे खातिर बीरगंज(नेपाल) जाये के अवसर भइल त उहाँ भोजपुरी के साहित्यिक माहौल देख के आ भोजपुरी कवि सम्मेलन में कवियन के सुन के दंग रह जाये के पड़ल । हमरा ई अनुमान ना रहे कि नेपाल में भोजपुरी के साहित्यिक सक्रियता एतना व्यापक आ ठोस आधार बना चुकल बा आ नेपाल के भोजपुरी कवि बौद्धिक दृष्टि से पोढ़ आउर आधुनिक भाव-बोध आ शिल्प-शैली से लैस हो चुकल बा । हमरा पता चलल कि नेपाल में भोजपुरी के सुधी लेखकन के संख्या पचास-साठ से ऊपरे बा, आ ऊ लोग ना सिर्फ बीरगंज में, बलुक नेपाल के भोजपुरी-भाषी सात जिलन के नगर-देहात का अलावें राजधानी काठमाण्डौ आ नेपाल के गैर-भोजपुरी-भाषी विभिन्न क्षेत्रन में भी फइलल-बसल बा। भोजपुरी का सन्दर्भ में बीरगंज पहुँच के आ नेपाल के विभिन्न भागन से आइल भोजपुरी कवियन के सुन के हमरा वस्तुतः उहे सुख मिलल जे कवनो शिव-भक्त हिन्दू का काठमाण्डौ पहुँच के बाबा पशुपतिनाथ के दर्शन कइला से मिलेला ।

ओह वार्षिकोत्सव के मंच पर बइठल-बइठल हमरा मन में ई परिकल्पना जागल कि नेपाल में भोजपुरी के जे उपलब्धि भइल बा आ हो रहल बा ओकरा से भोजपुरी के वृहत्तर सहित्यिक जगत के परिचित करावे खातिर काहे ना 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के 'नेपालीय भोजपुरी विशेषांक' निकालल जाय । अपना भाषण का क्रम में जब हम एह परिकल्पना के चर्चा कइलीं त एकर जोरदार स्वागत भइल, आ ओही घड़ी हमरा मन में ई परिकल्पना संकल्प के रूप ले लिहलस । ई विशेषांक ओही संकल्प के प्रतिफल ह ।

एक विशेषांक के योजना का मोताबिक साधन आ सामग्री जुटावे में, नेपाल के प्रतिष्ठित भोजपुरी साहित्यकार आ 'गमक' के प्रधान सम्पादक गोपाल 'अश्क' के अनुपम् सहयोग हमरा मिलल बा । विभिन्न लेखकन से लेख लिखववला का अलावें, एह विशेषांक में उनकर एगो महत्वपूर्ण योगदान बा, नेपाल के ओइसन तिरसठ गो भोजपुरी लेखकन के पता आ लेखन-विधा सहित नामावली, जे कहीं ना कहीं छप चुकल बा । गोपाल 'अश्क' हमार अनुजवत् स्नेहभाजन बाड़े । भारत में भोजपुरी के सक्रियता से, आं खास करके अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन से, ऊ पहिलहीं से जुड़ल बाड़े। एह विशेषांक के सम्पादन आ प्रकाशन में उनकर जवन सक्रिय सहयोग मिलल बा ओकरा खातिर आभार के औपचारिकता बरतला से, भोजपुरी के प्रति, आ हमरो प्रति, उनकरा नेह-निष्ठा के अपमान हो जाई । अलबत्ते, हम नेपाल के ओह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी साहित्यकार लोगन के प्रति हृदय से कृतज्ञ बानी जे एह विशेषांक के योजना के अनुरूप लेख तइयार कइल । एह विशेषांक के अंतिम अंश में नेपालीय भोजपुरी कवियन के रचनन के कुछ बानगी प्रस्तुत कइल गइल बा । हमरा अफसोस बा कि स्थानाभाव का चलते कुछ आउर कवियन के एकरा में समाविष्ट ना कइल जा सकल ।

भारत से बाहर, विभिन्न देशन में, जहाँ भोजपुरी-भाषी बसल बाड़े, भोजपुरी में साहित्य लेखन के कुछ काम हो रहल बा कि ना, आ हो रहल बा त का हो रहल बा, का कुछ लिखा-पढ़ा रहल बा, एकर जानकारी हमनी का नइखे । बाकिर एकरा सम्भावना से इन्कार नइखे कइल जा सकत, आ एकरा दिसाईं खोज आ सर्वेक्षण करेके जरूरत बा ।

स्वर्गीय प्रो॰ शिवनाथ चौबे

'भोजपुरी माटी' के यशस्वी सम्पादक प्रो॰ शिवनाथ चौबे के निधन के जानकारी हमनी का बहुत विलम्ब से, 'पाती' के अंक २२-२३ से मिलल ह । पश्चिम बंग भोजपुरी परिषद से सम्पर्क कइला पर, भोजपुरी माटी के प्रबन्ध सम्पादक श्री सभाजीत मिश्र से मालूम भइल ह कि चौबे जी के देहावसान 1997 के दिसम्बरे में हो गइल । अस्वस्थ त उहाँ का बहुत दिन से चलत रहीं । उहाँ के कैंसर के शिकायत हो गइल रहे, जवन जानलेवा हो गइल । कोरबा (मध्यप्रदेश) में अपना डाक्टर दामाद के आवास पर उहाँ का आखिरी साँस लिहनीं ।

चौबेजी के जनम उत्तर प्रदेश के बलिया जिला में सुकुल छपरा गांव में भइल रहे । बाकिर उहाँ के कार्यक्षेत्र कलकत्ता रहल । उहाँ का सुधी आ बहुश्रुत विद्वान आउर कलम के धनी सम्पादक रहीं । बीसन बरिस ले उहाँ का पश्चिम बंग भोजपुरी परिषद् के मासिक पत्रिका 'भोजपुरी माटी' के सफल सम्पादन कइलीं । वक्ता भी उहाँ का बेजोड़ रहीं । अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन से उहाँ के लगाव बहुत पुरान रहे आ उहाँ का एकर आजीवन सदस्य रहीं । पहिलें अक्सरे उहाँ का एह सम्मेलन के प्रवर समिति के सदस्य रहत रहीं आ सम्मेलन के काम में सक्रिय भूमिका निभावत रहीं । एह सम्मेलन के अधिवेशन में आ ओह अवसर पर आयोजित संगोष्ठियन में उहाँ का बड़ा उत्साह से भाग लेत रहीं । बाकिर राँची में आयोजित नउआँ अधिवेशन का बाद से उहाँ का सम्मेलन में आइल-गइल, स्वास्थ्य का गड़बडी का चलते, छोड़ देले रहीं आ बहुत-कुछ कटल-कटल रहत रहीं । तेहू पर भोजपुरी जगत के गतिविधि पर उहाँ के सतर्क नजर रहत रहे, आ समय-समय पर, उहाँ के कलम आक्रामक तेवर अपना लेत रहे। 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के एगो सम्पादकीय का सन्दर्भ में उहाँ का दू-दू बेर बहुत तीखा सम्पादकीय 'भोजपुरी माटी' में लिखलीं । बाकिर लगले, 'भोजपुरी माटी' के अगिले अंक में, 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के सम्पादक के भोजपुरी-सेवा का बारे में एगो लमहर प्रशंसात्मक लेख दोसरा पत्रिका से उद्धृत करत प्रकाशित कइलीं । कवनो खास बिन्दु पर मतभेद भा विरोध के व्यक्तिगत स्तर पर उतारे के प्रवृत्ति उहाँ में तनिको ना रहे । ई बहुत बड़ बात रहे, जे उहाँ के महानता के परिचायक बा । उहाँ का भोजपुरी के साहित्यिक जगत के एगो अइसन हस्ती रहीं, जेकर अभाव बहुत दिन ले महसूस होत रही । उहाँ के पुण्य स्मृति के 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' सादर नमन करत बा।

– पाण्डेय कपिल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नेपाल में भोजपुरी भाषा के स्थिति

– प्रा० विश्वम्भर कुमार शर्मा

भाषा आपन व्यापकतम रूप से त ऊ साधन हवे जेकरा माध्यम से हमनी का सोचेनी आ आपन विचारन के अभिव्यक्त करेनी सन् । बाकिर भाषाविज्ञान में जवन भाषा के अध्ययन, विश्लेषण करेनी सन्, ऊ ओतना व्यापक नइखे । भाषा ओकरा के कहल जाला जवना के बोलल आ सुनल जाय। आ ऊहो बोलल, सुनल कवनों चिरई चुरूँग के ना, कवनो बागड़ आदमी के ना, बलुक खाली बोले सके वाला आदमियन के ।

'भाषा' शब्द संस्कृत के 'भाष्' धातु से बनल बा जेकर अर्थ 'बोलल' भा कहल होला । अर्थात् भाषा ऊ ह जवना के बोलल जाय । भाषाविद् लोग द्वारा दिहल गइल परिभाषा के अध्ययन आ विश्लेषण कइल जाय, त भाषा के एगो सर्वमान्य परिभाषा अइसे कइल जा सकऽता कि –'भाषा उच्चारण-अवयवन से उच्चरित यादृच्छिक (Arbitrary) ध्वनि प्रतीकन के ऊ व्यवस्था ह जेकरा द्वारा समाज विशेष के लोग आपुस में विचारन के आदान प्रदान करेले।' संक्षेप में कहल जाय त भाषा अभिव्यक्ति वाहिका ह ।

भारोपीय भाषा परिवार के भाषा के रूप में परिचित भोजपुरी भाषा प्राचीन संस्कृत (प्राचीन कथ्य प्राकृत) के कथ्य मागधी प्राकृत शाखा के पूर्वीय गौडीय के बिहारी शखा के अन्तंगत के एगो सजीव भाषा ह । एकर उत्पति के सम्बन्ध भारत के भोजपुर नामक गाँव (आरा जिला) से रहल बा । अइसे भारत में नेपालीय भोजपुरी भाषा के स्थिति पर सुखद आश्चर्य व्यक्त कइल जाला आ कबो-कबो ई प्रश्नो कइल जाला कि उहाँ के भोजपुरी इहँवें के भोजपुरी अइसन बा का ? एह सन्दर्भ में हम विनम्र अनुरोध करब कि ई० सं० १९५० के सुगौली संधि के बाद ही भोजपुरी एने के भा ओने के कहाइल । ना त, कहल जाला कि सिवान (भारत) तक ले नेपाल के सिवान रहे। अब ई बात स्पष्ट हो जाता कि नेपाल में जवन भोजपुरी बोलल जाला, ओकर सीधा सम्बंध भारत के बिहार राज्य के सिवान, छपरा, चम्पारण जिला से रहल बा ।

भोजपुरी भारत के अलावे नेपाल, मॉरीशस, त्रिनीडाड, फिजी द्वीप आदि देश-विदेश में बोलल जाला । आज भोजपुरी भाषा के साहित्य समृद्ध होत जा रहल बा आ भोजपुरी भाषा आपन गन्तव्य के ओर बढ़त जा रहल बा।

नेपाल में भोजपुरी भाषा के स्थिति के नीमन से अध्ययन करे खातिर निम्नांकित विषय पर विचार कइल जरूरी बा –

(क) नेपाल में भोजपुरी भाषाभाषी के संख्या,
(ख) नेपाल में भोजपुरी भाषा के क्षेत्र,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(ग) नेपाल सरकार के निगाह में भोजपुरी के स्थान, आ

(घ) नेपालीय भोजपुरी भाषा साहित्य के विकास-कार्य ।

(क) नेपाल में भोजपुरी भाषा भाषी के संख्या - वि० सं० २०४९ साल के राष्ट्रीय जनगणना के मोताबिक भोजपुरी भाषा भाषी लोग ७.५ प्रतिशत रहि रहल बाड़े । भाषा भाषी के दृष्टि से भोजपुरी नेपाल के तिसरका भाषा के रूप में स्थापित बा । निम्न तालिका के अनुसार ई बात के पुष्टि कइल जाता -

जनसंख्या - १,८४,९१,०६६

नेपाली	-	५०.3 %
मैथिली	-	११.९ %
भोजपुरी	-	७.५ %
थारू	-	५.४ %
तामांग	-	४.९ %
नेवारी	-	३.७ %
मगर	-	२.३ %
राई/किरात	-	२.४ %
गुरुंग	-	१.२ %
बाकी में अन्य		

थारू भाषा के सम्बंध में चूडामणि उपाध्याय आपन पुस्तक 'नेपाली भाषा को उत्पत्ति' में कहऽतानी कि थारू के आपन कवनो स्वतंत्र रूपरेखा नइखे। ओह भाषा में भोजपुरी भाषा के प्रभाव ढेर बा । एह विषय पर भाषाविद् सर ग्रिर्यसन आ राहुल सांकृत्यायन भी सहमति देत कहले बा लोग कि थारू भाषा भोजपुरिए के एगो रूप ह । एक तरे, अगर थारू भाषा के भोजपुरी के ही एगो रूप मानल जाय, त नेपाल में भोजपुरी भाषा भाषी के संख्या १२.९ प्रतिशत होई। ई त एगो अलग विषय बा।

(ख) नेपाल में भोजपुरी भाषा के क्षेत्र - अइसे त, भोजपुरी पूर्व में झापा से लेके पश्चिम में बुटवल तक के तराई में बोलल जाला बाकिर भोजपुरी के मुख्य केन्द्र बारा आ पर्सा जिला हवे । अगर ध्यान से अध्ययन कइल जाय, त ई सहज पता लाग सकऽता कि नेपाल के सात जिला (रौतहट, बारा, पर्सा, चितवन, रूपन्देही, नवलपरासी आ लुम्बिनी) में भोजपुरी बोलल जाला । अपवाद के रूप में सुनसरी जिला अर्न्तगत दुवही नामक गाँव (जवन सुदूर पूर्व में अवस्थित बा) में भोजपुरी बोलल जाला । एह आधार पर नेपाल में भोजपुरी के तीन भाग में बाँटल जा सकऽता -

(i) पूर्वी भोजपुरी

(ii) केन्द्रीय भोजपुरी, आ

(iii) पश्चिमी भोजपुरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(i) पूर्वी भोजपुरी – बागमती नदी के पश्चिमी किनारा से बारा जिला के पूर्वी सीमा रेखा तक एगो रेखा खींचल जाय त, रौहतट जिला के भोजपुरी के पूर्वी भोजंपुरी कहल जा सकऽता। इहाँ के भोजपुरी में भारत के बैरगिनिया, सीतामढ़ी के स्थानीय भाषा के प्रभाव बा।

(ii) केन्द्रीय भोजपुरी – नेपाल के दूगो जिला (बारा आ पर्सा) के भोजपुरी के केन्द्रीय भोजपुरी कहल जाला। इहाँ त भोजपुरी के अलावा नेपाली भाषा भी भोजपुरी से प्रभावित हो के चलेला। बारा जिला में नेपाली के तरे बोलल जाला, ओकर एकाध गो उदाहरण ई बात के गवाही दिही–

'बसवा मा यति नं भीड़ थियो कि एको ठोप हवे न घूसेन'

(भो०–बसवा में अतना न भीड़ रहे कि एको ठोप हवे ना घूसल).

हेर त हेर ! नदियामा पनिया कति कति छ ?

(भो०–देख़ त देख़ ! नदिया में पनिया केतना बा)

इहाँ के भोजपुरी भारत के सिवान, छपरा आ चम्पारण जिला के भोजपुरी से प्रभावित बा।

(iii) पश्चिमी भोजपुरी – रूपंन्देही, नवलपरासी आ लुम्बिनी जिला में बोलल जाए वाला भोजपुरी के पश्चिमी भोजपुरी कहल जा सकऽता। इहाँ के भोजपुरी भारत के गोरखपुर (उत्तर प्रदेश) नया बस्ती से प्रभावित बा।

(ग) नेपाल सरकार के निगाह में भोजपुरी के स्थान – नेपाल सरकार एह बात के नीमन से जानत–बूझत बा कि भोजपुरी नेपाल के तिसरका भाषा हवे। नेपाल के संविधान में भोजपुरी भाषा के नेपाल के राष्ट्रभाषा के रूप में दर्जा मिलल बा। नेपाल सरकार के आपन निकाय जइसे नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान, नेपाल टेलीविजन आ नेपाल रेडियो के माध्यम से थोरे–बहुत भोजपुरी भाषा के साहित्य, कला आ संस्कृति के उत्थान करावे में मदत पूजा रहल बा। नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान एक ओर त भोजपुरी साहित्यकार लोग के मौलिक रचना अपना पत्रिकन (सयपत्री, कविता, समकालीन साहित्य) में छाप के विकास करा रहल बा, त दोसरा ओकर विद्वतवृत्त के तहत भोजपुरी के विद्वान लोग के द्वारा भोजपुरी साहित्य के शोध–ग्रन्थ तइयार करा रहल बा। एह संदर्भ में, मुकुन्द आचार्य द्वारा तैयार करावल आ प्रकाशित कइल (क) 'भोजपुरी गद्य साहित्य' आ (ख) 'भोजपुरी उखान टुक्का' उल्लेखनीय बा। गोपाल अश्क द्वारा तैयार करावल आ प्रकाशनार्थ स्वीकार कइल (i) 'नेपालीय भोजपुरी समकालीन कविता' आ (ii) 'नेपालीय भोजपुरी भाषा र साहित्य को इतिहास' भी उल्लेख योग्य बा। अतने ना, भोजपुरी व्याकरण, शब्दकोश, लोककथा, लोकगीत आदि विषय पर शोध ग्रन्थ लिखा रहल बा।

नेपाल टेलीविजन के द्वारा भोजपुरी के तीन गो टेलीफिल्म – 'करवट', 'कइसे भइल', आ 'जानकी' देखावल गइल बा आ 'फुलवारी' कार्यक्रम में भोजपुरी गीत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बजावल-देखावल जाला । एही तरे, नेपाल रेडियो के द्वारा भोजपुरी भाषा में समाचार प्रसारण आ साहित्यिक सांस्कृतिक कार्यक्रम 'संगम' प्रसारित हो रहल बा । कहे के मतलब ई बा कि भोजपुरी नेपाल सरकार के निगाह में बसल सजल बा। उदारवादी दृष्टि बा सरकार के भोजपुरी का प्रति ।

(घ) नेपालीय भोजपुरी भाषा साहित्य के विकास-कार्य - एह विषय पर इहाँ अतने कहल मोनासिब बा कि नेपालीय भोजपुरी भाषा आ साहित्य के विकास कार्य द्रुतगाति पर बा। एक ओर साहित्यिक पुस्तकन के प्रकाशन, साहित्यिक-सांस्कृतिक संघटनन के कार्यक्रम आ दोसरा ओर पत्र पत्रिकन के सम्पादन एह बात के साक्षी बा कि नेपालीय भोजपुरी भाषा आ साहित्य के स्थिति संतोपप्रद बा ।

अन्त में, हम इहे कहे के चाहब कि भोजपुरी भाषा एगो जीवन्त भाषा ह आ एकर साहित्य-संसार (लोक आ लिखित) दुनू समृद्ध बा । अब त नेपाल में प्राथमिक स्तर तक भोजपुरी पढावे खातिर मांग श्री गोपाल अश्क-सदस्य सचिव-नेपाल भोजपुरी प्रतिष्ठान के द्वारा हो चुकल बा आ सम्बंधित निकाय के सकारात्मक नजरिया दृष्टिगोचर बा । बाकिर संतोष यति ह, एह से, अतने विकास पर संतोष कर लिहल मोनासिब नइखे ।

☐ **ठाकुर राम बहुमुखी**
क्याम्पस, वीरगंज, नेपाल

भोजपुरी के अस्मिता-चिन्तन

(अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के
पहिलका पन्द्रह अधिवेशन के अध्यक्षीय भाषण-संग्रह)

दाम - दू सौ रुपा
सम्मेलन-सदस्य खातिर रियायती दाम एक सौ रुपया
डाक खर्च अलग से लागी

प्रकाशक
अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन
इन्द्रपुरी, पटना - ८०००२४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नेपालीय भोजपुरी काव्य-साहित्य

– गोपाल अश्क

काव्य ऊ लयात्मक शब्द-विधान ह, जेमें रस-सिद्धि के अवस्था के अभिव्यक्ति होखे आ रस-सिद्धि अवस्था में पहुँचे खातिर कवि जीवन आ जगत् के प्रतिक्रिया स्वरूप उत्पन्न अनुभूतियन के अलंकार, गुण तथा व्यंग्य आदि के माध्यम से अभिव्यक्ति करे के स्थिति से ऊपर उठ चुकल होखे । एह अवस्थ में ओकर वाणी दोष-मुक्त होई आ अलंकार, छन्द, गुण आदि एक-ब-एक ओमें आ जाई ।,

अइसे त काव्य के परिभाषा पाश्चात्य आ पूर्वीय विद्वान लोग अपना-अपना ढंग से देले बाँड़े बाकिर काव्य के लोक परिचित परिभाषा आचार्य विश्वनाथ के 'वाव्यं रसात्मकं काव्यम्' मानल जाला । हम प्रेमचन्द के दिहल परिभाषा से सहमत बानी कि काव्य जीवन के आलोचना ह । नेपालीय भोजपुरी काव्य-साहित्य के अध्ययन कइला के बाद डॉ० हरीन्द्र हिमकर द्वारा कहल गइल उक्ति से सहमत भइल जा सकत बा कि 'नेपाल का माटी में साहित्य सिरजे के बड़ा सम्भावना बा । नेपाल के प्रकृति कविता के कोष बा । भोजपुरी कविता के छन्द में बन्हाइल भा निबद्ध भावधारा एक देश का भाव-संसार के अपना रचना में उतार रहल बा ।'

तानाशाह बनाम राणा शासन के विरुद्ध वि० सं० २००७ साल में जनक्रान्ति के बिगुल फुंकाइल आ ओही साल फाल्गुण ७ गते राणाशाही के अन्हरिया रात डूब गइल आ प्रजातंत्र के किरिन फूटल । वातारण स्वतंत्र हो गइल । साहित्य प्रभावित भइल जवन स्वाभाविक रहल । वि० सं० २००९ साल में, वीरगंज में, ठाकुरराम कॉलेज (हाल-ठाकुरराम बहुमुखी क्याम्पस) के स्थापना भइल । हिन्दी पढ़ावे खातिर भारत से रामदेव द्विवेदी 'अलमस्त' अइनी । उहाँ का भोजपुरी के बड़का शुभचिन्तक आ भावुक कवि रहीं, ई नेपालीय भोजपुरी काव्य खातिर सार्थक उपलब्धि रहल । उहाँ का अगुवाई में कवि सम्मेलन होखे लागल, हिन्दी कवितन के साथे साथ भोजपुरी कवितन के भीं स्थान मिले लागल । बल्कि भोजपुरी कविता आपन रंग जमावे लागल, अइसन ओह बेरा के सुननिहार आ आजु के नेपाली साहित्य के लब्ध प्रतिष्ठित उपन्यासकार डॉ० ध्रुब चन्द गौतम के कहना बा । एकर सुखद परिणाम ई भइल कि भोजपुरी साहित्यकार लोग सामने आइल । आ जब सामने आइल लोग, त लाख प्रतिकूल वातावरण भइल बाकिर बिलाइल लोग ना । हाँ, गति मन्द अवश्य हो गइल। बात भइल ई कि वि० सं० २०१७ साल में राजनीति करवट बदललस आ नेपाल राजतंत्र शासन के अधीन हो गइल। जहाँ राजा के वाणी के देव-वाणी मानस जाय लागल, उहाँ साहित्य के विषय वस्तु राजा आ उनुकर यश गान के अलावा का हो सकत रहे, अनुमान लगावल जा सकत बा । इहे भइल । लागल देश नरेश के जयगान होखे । बाकिर भोजपुरी मरल ना । डॉ० ग्रियर्सन के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहनाम चरितार्थ हो गइल कि 'भोजपुरी इज द लैंग्वेज ऑव विरायल।'

स्व० रामदेव द्विवेदी 'अलमस्त' के एकाध गो गीत आज भी काफी लोकप्रिय बा। 'तहरा घरवा में पइसल बाटे चोर, अंजोर कर के देख भइया ना,' आ 'देखऽ दुनिया बदलल जाता, नया दिन आवता' आजो जीवन्त बा। वि० सं० २००९ साल से शुरुआत एह काव्य परम्परा के एगो पड़ाव मिलल वि० सं० २०१९ साल में जाके, जब एगो संगीतज्ञ के हाथ से एगो महान काम भइल। हाँ, राम प्रसाद राय थारू, वि० सं० २०१९ साल में, 'थरुहट के बउआ और बहुरिया' पिछले १००० बरिसन के इतिहास कहानी में प्रस्तुत' कह के लिखले। ई पुस्तक नेपालीय भोजपुरी साहित्य के प्रथम प्रकाशित पुस्तक हवे। हालाँकि ई गद्य के पुस्तक ह, तबो ई काव्य से प्रभावित बा। स्वयं लेखक स्वीकार कइले बाड़े-'हम न कवि और न बेसी पढ़लही बारी। सिर्फ तनीमनी गीत गाइले। ई बात भी अपने सभ से छिपल नइखे।' बाकिर आपन पाँचगो गीत राखे के मोह त्याग नइखन पवलें। इहाँ तक कि इनकर वाक्यांश भी काव्यगत हो के लिखात गइल बा। ईमान से जे कहल जाय, त स्व० राम प्रसाद राय थारू नेपालीय भोजपुरी काव्य साहित्य के प्रथम खिलल फूल 'गीतकार' हउवन। ई उन्हुकर किताब 'थरुहट के बउआ और बहुरिया' में संगृहीत कवितन के आधार पर कहल जा सकत बा। उदाहरण के तौर प' एगो गीत के कुछ अंश प्रस्तुत बा-

हो कत्थी कहिऔ तोहरा से,
कहाइत नइखे मोहरा से।

जब रहलक हमरा धनबीत,
यार दोस्त सब जोड़े प्रीत।
सबसे रहे हेम खेम,
महजनवो पूछे कुशल-छेम।।
बटइया भी अब तो छिना गेल,
हर मनी के खातिर भारी झगड़ा हो गइल लोहरा से।

मेहरी घर पर रोये मन में,
बस्तर नइखे ओकरा तन में।
भूखले दुखले सुतली राती,
बिना तेल के बूत गेल बाती।।
चोखा सेन्ह कुटइत रहे,
उहो भूखे हफइत रहे।।

बिचरा भागल जब अँजोर भइली पुअरा से ।।

एकरा बाद नेपालीय भोजपुरी साहित्य के जवन थोर-बहुत बिकास भइल बा. ओकर समूचा श्रेय पं० दीप नारायण मिश्र के बा। आचार्य पाण्डेय कपिल के शब्दन में "नेपाल में भोजपुरी साहित्य के पुरोधा रहल बानी पं० दीप नारायण मिश्र।" वि०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सं० २०२९ साल में, इहाँ का नेतृत्व में एक ओर नेपाल भोजपुरी समाज के स्थापना भइल, त दोसरा ओर 'सनेस' भोजपुरी पत्रिका के प्रकाशन शुरू भइल । एह वास्ते पं० दीप नारायण मिश्र नेपालीय भोजपुरी साहित्य खातिर वंदनीय बानी ।"

नेपालीय भोजपुरी काव्य-साहित्य के फुलवारी में निम्नांकित फूल गमकत बाटे -

१. पं० दीप नारायण मिश्र
   (क) अंजुरी के फूल (कविता संग्रह) वि० सं० २०३९
   (ख) फूलझरी (कविता संग्रह) वि० सं० २०४६
   (ग) दोहा नीति सार (नीति संग्रह) वि० सं० २०४६

२. गोपाल अश्क
   (क) कजरी (खण्ड-काव्य) वि० सं० २०४७
   (ख) कवि के जनमकुंडली (गीति संग्रह) ई० सन १९९४
   (ग) अभी बाकी बा (गजल-संग्रह) ई० सन १९९७

३. आश नारायण प्रसाद 'अशोक'
   (क) अशोक के कड़ी (गीत संग्रह)
   (ख) तोहरे बदे (गजल संग्रह) वि सं० २०५४

४. विश्वम्भर कुमार शर्मा
   (क) वसन्त इहाँ आ न सकल (कविता संग्रह) २०५३ वि० सं०

५. पुरुषोत्तम शर्मा
   (क) जनता के मत चिढाव बाबु (कविता संग्रह) वि० सं० २०५०
   (ख) घोषणा पत्तर (मानवाधिकार-गीत संग्रह) वि० सं० २०५२

६. उमा शंकर द्विवेदी 'दधीचि'
   (क) विदागिरी (खण्ड-काव्य) ई० सन १९८१

७. संजय कुमार श्रीवास्तव 'निशीथ'
   (क) कुँआर मेंहदी (खण्ड-काव्य) वि० सं० २०४७

कहे के मतलब कि नेपालीय भोजपुरी काव्य साहित्य में तीनगो खण्ड काव्य यथा 'विदागिरी', 'कुँआर मेंहदी' आ 'कजरी', दूगो गीत संग्रह- 'कवि के जनमकुंडली.' आ 'अशोक के कड़ी' कविता संग्रह- 'अंजुरी के फूल', 'फूलझड़ी', 'दोहा नीति सार', जनता के मत चिढाव बाबू, 'घोषणा पत्तर' आ 'वसन्त इहाँ आ न सकल' आ दूगो गजल संग्रह- 'तोहरे बदे' आ 'अभी बाकी बा' परिलक्षित बा। एकरा अलावा नेपालीय भोजपुरी काव्य साहित्य के भण्डार भरे में भोजपुरी पत्र-पत्रिकन के काफी योगदान रहल बा । वि० सं० २०२९ साल में, पं० दीप नारायण मिश्र के सम्पादकत्व में प्रकाशित 'सनेस' आ वि० सं० २०५१ में, गोपाल अश्क के सम्पादकत्व में प्रकाशित 'गमक' एह दिसाईं स्मरणीय रही। आज समूचा नेपाल में एकमात्र भोजपुरी साहित्यिक पत्रिका 'गमक' जिन्दा बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इहाँ तक; नेपालीय भोजपुरी क़ाव्य साहित्य के इतिहास जनलीं जा, अब काव्य के धारा आ जीवन्तता के सम्बन्ध में अध्ययन करब जा ताकि नेपालीय भोजपुरी कविता के भाव-भूमि, रूपतत्व, शैली, शब्द-विधान आ सजीवता आदि के जानकारी हो सको। समकालीन भोजपुरी कवितन के विविध रूप देखल जा सकत बा। कहीं ई अति कलात्मक, कहीं अलंकार-रहित सहज रूप में, कहीं एकदम ठेठ बोलचाल के रूप में त कहीं अन्य भाषा के शब्द गरिमा से रंगल नवीन रूप में परिलक्षित बा। आज के जीवन आ जीवन द्वारा भोगल जा रहल पीड़ा, आज के आदमी आ दूर होत आदमीयत, आशा, प्रेम, आकांक्षा से उत्पन्न भइल पीड़ा के अनुभव से समकालीन भोजपुरी कविता अछूता नइखे। समकालीन कवितन में एगो खास विशेपता पावल जाला — संवाद के मुद्रा। एकर सफल चित्रण देखीं-

'खेत में
फुलाइल पिअर सरसो
हमरा से पुछलख-
तोर हाथ कब पिअर होई (?)
हम कहनी,
तूं बँच जो ओला से
आ / अच्छा दाम बिका जो
तबे नू हमर बाबूजी
बर किनिहन।'

– श्रीमती गजल झा / नव पल्लव

आज राजनीति के रूप रंग बदल गइल बा। राज नेता लोग के चीन्हल आम आदमी के क्षमता से बाहर के चीज हो गइल बा। लोग समझ नइखे पावत कि नेता के ह आ नेतागिरी का कहाला। भले लोग अक्षम होखे बाकिर नेतालोग के चीन्हे में नेपालीय भोजपुरी कवि लोग अक्षम नइखन। व्यंग्यकार श्री मुकुन्द आचार्य नेतालोग के पहिचान अइसे प्रस्तुत करत बानी-'

बधाई बा !
अपने चुनाव जीत गइनी !
लोगवा पहिले कहत रहे-
ससुरा फोंकटिया नेता ह,
हरदम चन्दे माँगला,
जीतला पर,
कुछ ना गुदानेला।
अपने त अब
केन्द्र में रहब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

टी० भी० में लउकब
त / हमनी अपन नेता कहब,
ठीक बा,
अपने केन्द्र में रहब
त / इहाँ, क्षेत्र में भी शान्ति रही
लोगवा समझी-
नेताजी के प्रताप से शान्ति रहेला !!

अपने आपन क्षेत्र छोड़ देहनी
जिनिगी में इहे एगो नीमन काम कइनी !!

□ गमक - वर्प-१, अंक - १

मूल्यहीनता के आज के एह दौड़ में पं० दीप नारायण मिश्र उदघोषणा कर रहल बानी-

'काम वासना प्रेम भइल अब, लबरा चुंगल श्रेप्ठ बनल बा,
सज्ज्न के ना पूछ कहीं पर, दुर्जन सभ के मेठ बनल बा ।

-'फूलझरी'

आ दोस्त-दुश्मन के पहिचाने के उपाय बतावऽ तानी –

'काग कोइल में भेद ह दुनू के एक्के रंग ।
परखीं रितु वसन्त में सुन बोली के ढंग ।।

आजो नारी के स्थिति में कवनो खास सुधार भा परिवर्तन नइखे आ सकल । आजो नारी एगो वस्तुए के रूप में समुझत जात बाड़ी । नारी जीवन के ई दुर्गति कवि से सहात नइखे आ ऊ विरोध कर देत बा-

नारी जीवन जरत रही !
बन के लौंड़ी जिअला में, मरला पर कोप भजन,
रही तड़पत, लहकत नारी जाति के का ई जीवन ।
का जिअआ का मरला पर हँसिये खाली मरदा,
का नारी जीवन के प्रति दुत्कारे त्याग ह श्रद्धा ।।
हम ना सीता राम के जे धंरती में जा समाईं,
ना लक्ष्मण के उर्मिला कि जीवने लोर बनाईं ।।
रे हम द्रौपदी, रही हमर खुलले हरदम केश,
देख डेरइहें सब कसाई बिगड़ल हमर ई भेष ।।

- गोपाल अश्क-धँधोर / गमक-अंक-२, वर्प -१

आजो जिनिगी के परिभाषा ढूंढल कवनो आसान नइखे । ई ठीक बा कि मउअत हर रांज घूँघट उठावऽता, बाकिर तब्बो जिनिगी के चंचल धारा अनवरत बहत जा रहल बा, हाँ, हँसत जा रहल बा-

मरद के व्यवहार से
कुद्ध हो के एक जनी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊँच घर के छत से
कूदे खातिर
सुरफुरात रहलीं
तबे
पाछा से
एगो छोट लइका
आँचर के कोरि
पकड़त
तोतलात
बोल पड़ल -
माई !

विश्वम्भर कु० शर्मा / वसन्त इहाँ आ न सकल

नेपालीय भोजपुरी काव्य-साहित्याकाश में गजलन के चंदा भी आँख-मिचौनी खेलत नजर आवत बा। नेपाल में दूइएगो (गोपाल अश्क आ आश नारायण प्र० अशोक) गजल के साधना में मग्न बाडे। एकाध गजलन के एकाध शेर प्रस्तुत कइल चाहत बानी –

'साँच जब से दफन हो गइल,
लोग अजगर के फन हो गइल ।'

- आश नारायण प्र० अशोक / भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, पटना

जिया तरसेला बबुआ से दू टूम ब्रोलेला,
हिया हहरेला उनका से मुंह खोलेला ।

- गोपाल अश्क / भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, पटना

जे ना होला ऊ लउके इहाँ आदमी,
ऊ ना होला जे लउके इहाँ आदमी ।,

X X X

देखीं कइसन कसाई संसार हो गइल,
जियल जीवन के ताड़ पहाड़ हो गइल ।

- नव प्रज्ञापन, काठमाण्डो / गोपाल अश्क

अतने ना, नेपालीय भोजपुरी काव्य आज के जमाना के कदम से कदम मिला के बढ़ि रहल बा, एकर गवाही देत बा भोजपुरी जगत् में अबगे उगल काव्य विधा-'हाइकु' के प्रणयन –

स्वाभिमान से
जिनिगी के जियल
असली जीत

□

धधके लागी
दुख दवा के जीयऽ
लोर पटा के।

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समर्पण ह
सउँपल खुद के,
नकारल ना।

अभाव के भाव
समभाव भइल
बढ़-बढ़ के।

- सभी - आश नारायण प्र० अशोक /
'भोजपुरी के चुनिन्दा हाइकु', पटना

हो सकत बा
प्यार फूट के आवे
अपमान से।

☐

दुख आवेला
अचके जिनिगी में
बे-बोलवले!

☐

हर व्यक्तित्व
खास लउके वाला
खास ना होला!

☐

के कह सकी
कइलीं ना कुछऊ!
गीत गवलीं!

☐

हर समस्या
समाधान खोजेले
अपने-आप

☐

- सभी-गोपाल अश्क / 'भोजपुरी के चुनिन्दा
हाइकु', पटना

एक तरे निष्कर्ष का तौर पर ई कहल जा सकत बा कि नेपालीय भोजपुरी काव्य-साहित्य के स्थिति काफी संतोषप्रद आ भविष्य उज्जवल बा। हम आचार्य पाण्डेय कपिल के उद्धृत करत आपन ई लेख के विराम दिहल चाहत बानी- "भोजपुरी का सन्दर्भ में वीरगंज (नेपाल) के यात्रा से उहे सुख मिलल जे शिवभक्त हिन्दू का काठमाण्डो (नेपाल) के यात्रा से मिलेला। कवि सम्मेलन में सुनल कवितन से बुझाइल कि नया भाव-बोध आ शिल्प-शैली से नेपाल के भोजपुरी कवि अपनैती कर लेले बाड़न। कविता में बौद्धिक तत्वन के समावेश आज के युग के जरूरत बा। हमरा खुशी बा कि एकरा ओर इहाँ के भोजपुरी कवि लोग के ध्यान बा।"

☐ प्रधान - सम्पादक - 'गमक'
वीरगंज (नेपाल)

भोजपुरी कहानी हाल साल के
(भोजपुरी कहानी संकलन)
दाम-एक सौ रुपया / सम्मेलन के सदस्य खातिर तीस रुपया
प्रकाशक
अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, इन्द्रपुरी, पटना-८०००२४

☆ नेपाल भोजपुरी प्रतिष्ठान के वार्षिकोत्सव (८ मार्च १९९७) में मुख्य अतिथि का रूप में दिहल आचार्य पाण्डेय कपिल के भाषण से उद्धृत।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नेपालीय भोजपुरी गद्य-साहित्य

– चन्द्र किशोर झा

नेपाल एगो छोट, शान्त आ सुन्नर देश ह, जहाँ चार वर्ण आ छत्तीस जात के विभिन्न फूल फुलाइल बा। राष्ट्रनिर्माता श्री ५ पृथ्वी नारायण शाहदेव कहलहूँ बाड़े – 'नेपाल चार वर्ण आ छत्तीस जाति के एगो साझा फुलवारी ह'। इहाँ विभिन्न भाषा भाषी रहि रहल बाड़े। आ हरेक भाषा आपन भाषिक आ साहित्यिक विकास के वास्ते समान रूप से सहकारी वातातरण पवले बा। नेपाली, मैथिली के तरह ही भोजपुरियो के साहित्यिक विकास यात्रा वि० सं० २००७ साल के जनक्रान्ति के बाद से ही शुरू भइल बा। कहल जाला- जब्र भाषा अति विकसित आ सम्पन्न हो जाला तब ओह भाषा के साहित्य में गद्य साहित्य के भण्डार समृद्ध हो सकेला। दोसर शब्द में, साहित्य के भण्डार गद्य आ पद्य दुनू विधा से भर सकेला। नेपालीय भोजपुरी साहित्य में ई एगो बड़ा ही सुखद अध्याय अंकित बा कि इहवाँ के लिखित (भोजपुरी) साहित्य के शुरुआत ही गद्य विधा से भइल बा। नेपालीय भोजपुरी साहित्य के इतिहास के अध्ययन कइला पर ई पता चाऽता कि नेपालीय भोजपुरी साहित्य के प्रथम प्रकाशित पुस्तक – 'थरुहट के बउआ और बहुरिया' गद्य विधा के रचना ह! एकरा बारे में आगे उपन्यास विधा के तहत विस्तृत अध्ययन कइल जाई।

नेपाल में खाली भोजपुरिए के ही ना बल्कि अन्य भाषा जइसे नेपाली, मैथिली, नेवारी आदि के भी साहित्यिक विकास वि० सं० २००७ में प्रजातंत्र के स्थापना के बादे भइल बा। इतिहास गवाह बा कि नेपाल के राजनीति शुरू से अब तक स्थिरता नइखे पा सकल। समय-समय पर राजनीतिक पटाक्षेप होत रहल बा आ नेपाली जन जीवन प्रभावित होत रहल बा। वि० सं० २००७ साल में राणा शासन के विरोध में जनक्रान्ति भइल जवना में वीरगंज केन्द्रीय भूमिका के निर्वाह कइले रहे। जब दासता से मुक्ति मिलल, त घर, टोला, गाँव आजादी के नव ज्योति से जगमगा उठल। नेपाल में निजी क्षेत्र से पहिलका कॉलेज वीरगंज में खुलल। वि० सं० २००९ साल में ठाकुर राम कालेज (हाल-ठाकुर राम बहुमुखी क्याम्पस) के स्थापना भइल। आज हिन्दी ऊँच शिक्षा में एच्छिक विषय के रूप में पढ़ावल जाले बाकिर ओह बेरा त पढ़ाई के माध्यम भाषा के रूप में ही हिन्दी रहे। हिन्दी पढ़ावे वास्ते भारत से रामदेव द्विवेदी 'अलमस्त' अइनी। ई नेपालीय भोजपुरी साहित्य वास्ते एगो सार्थक आगमन भइल। नेपाल आ भारत के सामाजिक, वैवाहिक, धार्मिक, आर्थिक आ राजनैतिक सम्बन्ध एक दोसरा से देह आ परछाई के लेखा रहल बा, एकरा के केहू मिटा ना पाई।

नेपालीय भोजपुरी गद्य साहित्य के समुचित जानकारी करे वास्ते नेपाल में प्रकाशित भोजपुरी पत्र पत्रिकन आ व्यक्तिगत पुस्तकन के अध्ययन कइल आवश्यक बा। काहेंकि पत्र पत्रिकन से ही विधागत अध्ययन हो सकऽता। पं० दीप नारायण मिश्र, विजय प्रकाश 'बीन' आ गोपाल अश्क के सम्पादकत्व में प्रकाशित क्रमश: 'सनेस' 'सगुन' आ 'गमक' में प्रकाशित गद्य विधा के रचनन के आधार पर निम्नांकित भाग में नेपालीय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी गद्य साहित्य के बाँट के अध्ययन कइल जा सकऽता -

(क) उपन्यास,
(ख) कथा, लघुकथा, कहानी,
(ग) लेख, निबन्ध, समीक्षा,
(घ) एकांकी, नाटक, टेलीफिल्म, आ
(ङ) शोध ग्रन्थ ।

(क) उपन्यास - नेपालीय भोजपुरी साहित्य में पहिलके बेर गद्य साहित्य के रचना-उपन्यास - '१००० वर्ष पहले का इतिहास कहानी के रूप में प्रस्तुत - 'थरुहट के बउआ और बहुरिया' वि० सं० २०१९ साल में, राम प्रसाद राय थारू के कलम से लिखाइल । हिन्दी आ भोजपुरी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ० विवेकी राय के शब्द में - 'थरूहट के बउआ और बहुरिया' भोजपुरी साहित्य के प्रथम आंचलिक उपन्यास ह । एह उपन्यास के कथावस्तु में थारू जाति के रीति-रिवाज़, गुण, अवगुण आदि लउकत बा । मुकुन्द आचार्य के उपन्यास-'डार एक फूल अनेक' प्रतीक (समाचार पत्रिका) में धारावाहिक रूप में प्रकाशित बा। एकरा बाद वि० सं० २०४७ में, नागेन्द्र प्रसाद कानू के कलम से 'पापहरा' लिखाइल । एह उपन्यास के कथावस्तु दू जाति के मिलन से पैदा होखे वाला समस्या रहल बा।

(ख) कथा, लघुकथा, कहानी - नेपालीय भोजपुरी कथा साहित्य काफी सन्तोषप्रद बा । नेपाल के भोजपुरी के पहिलका कहानी कवन ह ई कहे खातिर 'सनेस' पत्रिका में प्रकाशित कहानियन के जाँच-पड़ताल जरूरी बा । बाकिर ई कहे में तनिको हिचकिचाहट नइखे कि नेपालीय भोजपुरी प्रथम कहानीकार शिवशंकर प्रसाद रौनियार हई । उनकर 'खानदानी लड़की', 'दो गज जमीन के नीचे', 'प्रेम के वेदी पर' 'सनेस' में प्रकाशित बा । नेपालीय भोजपुरी कहानी के प्रथम पुस्तक 'नइहर के चुनरी' वि० सं० २०५३ में गोपाल अश्क के कलम से लिखाइल । एह में 'जहर भरल सिन्होरा', 'तिरिया हठ', 'ना-ना', 'प्रणाम पंडी जी', 'खोइंछा', 'दूरी नजदीकी,' 'ई का भइल', 'फगुआ' आ 'नइहर के चुनरी' शीर्षक से नौगो कहानी संगृहीत बा । एकरा अलावें, 'गमक' के वर्ष -१, अंक - ४, कहानी विशेषांक के रूप में प्रकाशित बा । लघुकथा के शुरूआत गोपाल अश्क के कलम से होखऽता । 'सगुन' में 'बोतल के टुक्का' स्तम्भ के तहत- 'कवि', 'धनिया' प्रकाशित बा आ पटना, बिहार से प्रकाशित 'एक मुट्ठी लाई (सं० पाण्डेय कपिल) में 'का जाने काहे', आ आश नारायण अशोक के 'आपन घर' प्रकाशित बा ।

नेपालीय भोजपुरी के कथाकार में शिवशंकर प्रसाद रौनियार, गोपाल अश्क, मुकुन्द आचार्य, आश नारायण अशोक, चन्द्रकिशोर झा, गजल झा, राम चन्द्र साह, उमा शंकर द्विवेदी प्रमुख बाड़े ।

(ग) लेख, निबन्ध, समीक्षा - लेख, निबन्ध, समीक्षा के ओर भी नेपालीय भोजपुरी साहित्यकार लोग के कलम खूब चलल बा । पत्र-पत्रिकन में प्रकाशित लेख, निबन्ध आ समीक्षा के आधार पर एह विधा में कलम चलावे वाला के नाम में पं० दीप नारायण मिश्र, उमाशंकर द्विवेदी, गोपाल अश्क, मुकुन्द आचार्य, विश्वम्भर कुमार शर्मा, आश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नारायण अशोक आ चन्द्रकिशोर झा के नाम प्रमुख रूप से उल्लेखनीय बा। पं० दीप नारायण मिश्र के 'भोजपुरी संस्कृत के केतना नियरा', गोपाल अश्क के 'नेपाल में भोजपुरी : एक अध्ययन' विश्वम्भर कु० शर्मा के 'नेपाल में भोजपुरी साहित्य के स्थिति' आदि, चर्चा में रहल बा। मुकुन्द आचार्य आ गोपाल अश्क एगो अइसन निबन्धकार के रूप में लउकऽता लोग जेकर साधना भोजपुरी आ नेपाली दुनू भाषा में बराबर बा, एक दिसाईं। भोजपुरी में लेख, निबन्ध लिखला के साथे साथ 'नेपाली' राष्ट्रभाषा में भी भोजपुरी कला, साहित्य के बारे में लेख, निबन्ध लिखऽता लोग।

(घ) एकांकी, नाटक, टेलीफिल्म – नेपालीय भोजपुरी के प्रथम नाटककार पं० राम चन्द्र चतुर्वेदी हउवन आ प्रथम नाटक 'माधुरी' (सनेस में प्रकाशित) हवे। ओकरा बाद नाटक का क्षेत्र में प्रकाशित रूप में नजर आवेवाला नाटककार हउअन गोपाल 'अश्क'। 'सगुन' में, इनकर प्रथम नाटक 'वाह रे बेटा' प्रकाशित भइल, आ अब तक 'भेष बिना के भाव', 'ऊँट आइल न पहाड़ का नीचे', 'तलाक के बाद', आ 'कँवारी ना खुलल' प्रकाशित बा। अइसे, प्रकाशित ना बल्कि मंचन के रूप में प्रदर्शित भइल नाटक के देखल जाय त गोपाल गिरि के – 'अब फरियाई', मुकुन्द आचार्य के 'जनम भइल शैतान के' काफी लोकप्रिय रहल बा। ज्ञातव्य होखो, गोपाल अश्क के – 'वाह रे बेटा' आ 'ऊँट आइल न पहाड़ का नीचे', के मंचन भी कवि सम्मेलन में भइल बा। नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान के नाटक महोत्सव में मुकुन्द आचार्य आ राम प्रवेश कुँवर के नाटक प्रदर्शित भइल बा। टेलीफिल्म के कथा संवाद भी नेपालीय भोजपुरी साहित्यकार लोग लिखल। अभी ले नेपाल टेलीविजन से 'करवट', 'कइसे भइल' आ 'जानकी' भोजपुरी आ नेपाली-भोजपुरी मिश्रित टेलीफिल्म 'राप' आ 'अलिखित' प्रसारित हो चुकल बा। 'कइसे भइल' आ 'जानकी' के कथा-पटकथा के लिखनिहार क्रमशः मुकुन्द आचार्च आ संजय कुमार श्रीवास्तव हउवन। 'राप' आ 'अलिखित' डॉ० ध्रुबचन्द्र गौतम के कलम से लिखाइल बा।

(ङ) शोध ग्रन्थ – नेपालीय भोजपुरी गद्य साहित्य के भण्डार शोध-ग्रन्थन से भी समृद्ध भइल बा। नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठिान मुकुन्द आचार्य से तैयार करवा के (क) 'भोजपुरी गद्य साहित्य' आ (ख) 'भोजपुरी उखान टुक्का' प्रकाशित कइले बा आ गोपाल अश्क से 'नेपालीय भोजपुरी भाषा आ साहित्य के इतिहास' तैयार करवा के प्रकाशंनार्थ स्वीकार कइले बा।

उपसंहार – एह तरह नेपालीय भोजपुरी गद्य साहित्य में, पत्र-पत्रिकन में प्रकाशित गद्य के रचनन का अलावा निम्नलिखित पुस्तक प्रकाशित दृष्टिगोचर बा –

१. 'थरुहट के बउआ और बहुरिया' (उपन्यास)
२. 'डार एक फूल अनेक' ('प्रतीक' में धारावाहिक रूप में प्रकाशित) उपन्यास
३. पपिहरा (उपन्यास) आ
४. नइहर के चुनरी (कहानी संग्रह)।

निष्कर्ष के तौर पर ई कहल जा सकता कि नेपालीय भोजपुरी गद्य साहित्य संतोषजनक आ विकासोन्मुख बा आ एकर भविष्य उज्जवल बा।

☐ श्रीपुर, वीरगंज
(नेपाल)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नेपालीय भोजपुरी साहित्य के इतिहास

– आश नारायण प्रसाद 'अशोक'

भोजपुरी भाषा आ साहित्य के संबंध में प्रकाश डालत डॉ० राम कुमार वर्मा कहले बाड़े – ' भोजपुरी साहित्य जेतना मधुर बा ओतनो हृदयस्पर्शी भी बा। ओमें संवेदना के संसार निरन्तर स्पन्दलशील रहेला । हम ओसे सदैव रस ग्रहण करत रहेनी ।' भोजपुरी साहित्य के सम्यक् अध्ययन करे खातिर नेपाल में लिखाइल पुस्तकन के कालक्रम से विधावार अध्ययन कइल जरूरी बा। वि० सं० २००६ (ई० सन १९५०) के पहिले भोजपुरी के कवनो खास प्रगति भा संकेत तक नजर नइखे आवत । राणा शासन में चीं तक बोले के आजादी ना रहे, लिखे-पढ़े के त बात कोसों दूर बा । जब वि० सं० २००७ (ई० सन १९५०) में राणाशाही के विरोध में लड़ाई भइल आ प्रजातंत्र के स्थापना भइल तब जा के बोले-लिखे-पढ़े के वातावरण बनल । वि० सं० २००९ साल (ई० सन १९५२) में वीरगंज में ठाकुर राम कॉलेज के स्थापना भइल आ ओमें हिन्दी के प्राध्यापक के रूप में रामदेव द्विवेदी 'अलमस्त' जी अइनीं । साँच पूछीं त तबे से भोजपुरी साहित्य खातिर जमीन तैयार भइल। ओकरा बाद धीरे-धीरे लिखाए-पढ़ाए लागल । कालक्रम के मोताबिक नेपालीय भोजपुरी साहित्य के निम्न प्रकार से विभाजित कइल जा सकत बा –

(क) प्रारंभिक काल - (वि० सं० २००९-२०१९) (ई० सन १९५२-१९६२ तक)

(ख) मध्यकाल काल - (वि० सं० २०१९-२०२९) (ई० सन १९६२-१९७२ तक)

(ग) आधुनिक काल - (वि० सं० २०२९ से अब तक) (ई० सन १९७२ से अब तक)

(क) प्रारंभिक काल (वि० सं० २००९-२०१९) - नेपालीय भोजपुरी साहित्य के इतिहास में रामदेव द्विवेदी अलमस्त के नाँव स्वर्ण अक्षर में लिखाइल बा । उँहें के सत्प्रयास के फल ह जे आज नेपाल में भोजपुरी साहित्य के बगीचा गमक रहल बा । वि० सं० २००९ साल में जब उहाँ का वीरगंज में अइनी त उहाँ के साथे साथ भोजपुरी माटी के सोंध महको आइल । चूँकि उहाँ का भारत के आ भोजपुरी क्षेत्र के निवासी रहीं, एसे उहाँ में भोजपुरी रचल बसल रहे । हालाँकि उहाँ का हिन्दी के प्राध्यापक के रूप में आइल रहीं, बाकिर भोजपुरी के सपूत भइला के वजह से भोजपुरियो से जुडल रहीं । उहाँ का नेतृत्व में हिन्दी कवि सम्मेलन होखे लागल आ ओ कवि सम्मेलन में भोजपुरी के गीत-कविता के पाठ होखे लागल । इहँवें से नेपालीय भोजपुरी साहित्य के इतिहास शुरू होखता । उहाँ के भोजपुरी गीत-कविता अतना ना लोकप्रिय रहे कि आजो ले जीवन्त बा । एकर खास वजह समसामयिक वस्तुस्थितियन पर आधारित भइल रहे। भारत में अबगे प्रजातंत्र आइल रहे आ कुछ स्वार्थी लोग के उदय होखे लागल रहे । शुरू से आज ले नेपाल के राजनीति प्रत्यक्ष भा अप्रत्यक्ष रूप में भारते से प्रभावित रहल बा । इहे वजह बा कि 'अलमस्त' के गीत 'तोरा घरवा में पइसल बाटे चोर, अँजोर क कं देख

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भइया ना' काफी लोकप्रिय रहल । चूँकि प्रजातंत्र आ गइल रहे, नीच-ऊँच, अमीर-गरीब के भेदभाव हटावे के नारा खूब चले लागल रहे । हिन्दी के साहित्यकार लोग एह विषय पर खूब कलम तोड़त रहे । एही से अलमस्त के गीत 'देख दुनिया बदलल जाता नया दिन आवता' भी काफी लोकप्रिय रहल । कहे के मतलब ई कि अलमस्त के रचना में ओह बेरा के समाज आ सामाजिक स्थिति जिन्दा रहे, बोलत रहे । एकर प्रभाव खूब पड़ल । नेपाल के भोजपुरिया लोग काफी प्रभावित भइल जवन स्वाभाविक रहे । ज्ञातव्य बा, नेपाल में भी आजादी के लड़ाई के पहिलका बिगुल वि० सं० २००७ साल में भोजपुरी के गढ़ पर्सा जिला से फुंकाइल । बाकिर भइल का कि वि० सं० २०१७ साल में (ई० सन १९६०) प्रजातंत्र के सूरज डूब गइल आ निर्दलीय पंचायती व्यवस्था के लागू कइल गइल । रामदेव द्विवेदी अलमस्त ओहू बेरा चुप ना भइनी जवना के कारण नेपाल छोड़े के पड़ल । 'ई कनहा राजा देश के बिगाड़ देलस' कविता जान के काल हो गइल । अइसन इहाँ के लोग कहेला । ई ठीक बा कि २०१७ में प्रजातंत्र समाप्त हो गइल । वातावरण ओतना स्वतंत्र ना रह पाइल । बाकिर चस्का त लागिए गइल रहे। वि० सं० २०१९ (ई० सन १९६२) में राम प्रसाद राय थारू (जे आज दैहिक रूप में हमनी का बीच नइखीं) के उदय भइल आ सिर्फ नेपालीय भोजपुरी में ही ना बल्कि समूचा भोजपुरी साहित्य में प्रथम आंचलिक उपन्यास 'थरूहट के बउआ और बहुरिया' लिखाइल । अभिप्राय ई कि नेपालीय भोजपुरी साहित्य के इतिहास वि० सं० २०१९ (ई० सन १९६२) से शुरू भइल। एह अवधि के प्रारंभिक काल मानल जा सकता।

(ख) मध्यकाल (वि० सं० २०१९-२०२९) - जइसे कि ऊपर वर्णन हो चुकल बा कि नेपाल के राजनीति आ व्यवस्था बदल गइल रहे । देश आ नरेश के जयगान गावे वाला के छोड़ के केहू के गुजारा ना होखे । एह से १० वर्ष, हाथ गोड़ सरियावे में लागल । वि० सं०- २०२९ साल कुआर महीना में भोजपुरी प्रेमीलोग के एगो जमात खडा भइल जेकर अगुवाई पं० दीप नारायण मिश्र कइनी । आ उनके नेतृत्व में नेपाल भोजपुरी साहित्य परिषद के गठन भइल जवना में भोजपुरी के साहित्यकार राम प्रसाद राय थारू, पं० रामचन्द्र चतुर्वेदी, शिवशंकर प्रसाद रौनियार लोग भी शामिल रहल । इहे साल में कार्तिक २२ गते वर्त्तमान महारानी के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में पहिले पहल 'सनेस' नाँव के भोजपुरी के एगो अनियतकालीन पत्रिका पं० दीप नारायण मिश्र के सम्पादकत्व में प्रकाशित भइल । एकरा प्रकाशन से नेपालीय भोजपुरी साहित्य के महल के जग तैयार भइल, कहल जा सकता । काहेकि 'सनेस' पत्रिका आपन साते गो अंक तक में साहित्य के हर विधा (काव्य, कथा, लेख, निवंध आ एकांकी) के रचना प्रकाशित क के अच्छा सहयोग देलस । एह तरे नेपालीय भोजपुरी साहित्य के मध्यकालीन साहित्यकार लोग में पं० दीप नारायण मिश्र, पं० रामचन्द्र चतुर्वेदी, शिवशंकर प्रसाद रौनियार, राजेन्द्र बरनवाल, भैरवनाथ चालिसे, लछुवन मदेशिया, प्रमुख रूप से बा लोग ।

(ग) आधुनिक काल (वि० सं० २०२९ - अब तक) - पत्र-पत्रिकन के प्रकाशन से नेपालीय भोजपुरी साहित्य के जमीन हाल हो गइल। ९ वर्ष के बाद यानी कि वि०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सं० २०३८ (ई० सन १९८०) में नेपालीय भोजपुरी साहित्य में पहिलका खण्डकाव्य प्रकाशित भइल। उमा शंकर द्विवेदी 'दधीचि' के 'विदागिरी' (भोजपुरी खण्ड काव्य) के खूब जोर-शोर से स्वागत भइल। साँच पूछी त नेपालीय भोजपुरी साहित्य के इतिहास में निजी पुस्तक प्रकाशन से शुरू भइल बा। वि० सं० २०३९ (ई० सन १९६३) में, नगेन्द्र प्रसाद कानू के प्रकाशत्व आ विजय प्रकाश बीन के सम्पादकत्व में 'सगुन' (समाचार पत्र) प्रकाशित भइल ! ई बात जेतना कहे में आसान बा, ओतना करे में नइखे। ओह बेरा भोजपुरी में पत्रिका के रजिष्ट्रेशन करवावल लोहा के चना चबवला के बराबर रहे। एह सन्दर्भ में जब विचार कइल जाला त मन श्रद्धा से भर जाला। धन्य बा लोग ओह बेरा में भोजपुरी प्रेमी लोग, जे धन आ तन दुनू गिरवी राख के भोजपुरी के सेवा कइल, आ उहो हरदम 'कब्ब जेल में चल जाई' के भय के बीचो बीच। वि० सं० २०४४ (ई० सन १९८७) में पं० दीप नारायण मिश्र के साथे कुछ उत्साही भोजपुरी प्रेमी लोग (जेमें भाग्यनाथ गुप्ता जइसन) आगे आइल आ पहिल बेर भोजपुरी कवि सम्मेलन भइल। ई परम्परा आजु ले जीवन्त बा। आज त भोजपुरी के हरेक संस्था कपनो ना कवना बहाने भोजपुरी कवि सम्मेलन करवावत रहेला। वि० सं० २०४५ (१९८८) के कवि सम्मेलन के बाद नेपालीय भोजपुरी साहित्य के आँगन में कुछ अइसन साहित्यकार आइल जे भोजपुरी के आन्दोलनकारी साहित्यकार कहाइल। निजी पुस्तकन के प्रकाशन से ले के कार्यक्रम संचालन तक आ भोजपुरी उदगम स्थल भारत से सम्बंध सम्पर्क से लेके संगठन तक के कार्य कइल गइल। अइसन आन्दोलनकारी साहित्यकार लोग में गोपाल अश्क, आश नारायण अशोक, चन्द्रकिशोर झा, विश्वम्भर कु० शर्मा, मुकुन्द आचार्य आदि लोग प्रमुख बा। आधुनिक काल तक आवत-आवत भोजपुरी साहित्य में अतना पुस्तक प्रकाशित हो गइले स कि ओंकनी के विधागत अध्ययन कइल मोनासिब होई। अर्थात् नेपालीय भोजपुरी के लिखित साहित्य के निम्नलिखित विधा के तहत बाँट के अध्ययन कइल जा सकत बा-

(i) उपन्यास
(ii) काव्य
(iii) कथा
(iv) निवंध, लेख, समीक्षा
(v) नाटक
(vi) शोध ग्रन्थ

(i) उपन्यास – एह विधा में कलम ओतना नइखे चलल, बाकिर जवन थोर-बहुत चलल बा ऊ कम महत्वपूर्ण नइखे। प्रारंभिक काल के तहत ई साधारण जानकारी भइल ह कि नेपालीय भोजपुरी साहित्य के प्रथम पुस्तक उपन्यासे रहल। जी, हाँ, राम प्रसाद राय थारू थारू जाति के रीति-रिवाज, परम्परा, गुण, अवगुण के विगय बना के 'थरूहट के बउआ और बहुरिया' वि० सं० २०१९ (१९६२) में लिखनी। एकरा बाद, मुकुन्द आचार्य के 'डार एक फूल अनेक' उपन्यास 'प्रतीक' (समाचार पत्र) में धारावाहिक रूप में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशित भइल । वि० सं० २०४७ (ई० सन १९९०) में नागेन्द्र प्रसाद कानू के 'पपिहरा' (भोजपुरी उपन्यास) प्रकाशित भइल । एह उपन्यास में दू जाति आ सम्प्रदाय के मिलन के बाद उत्पन्न होखे वाला सामाजिक कुरीतियन के सजीव वर्णन बा । अभिप्राय ई कि नेपालीय भोजपुरी साहित्य में (क) थरुहट के बउआ और बहुरिया (ख) डार एक फूल आ (ग) पपिहरा तीन गो उपन्यास परिलक्षित बा ।

(ii) काव्य – काव्य साहित्य के दिसाई नेपालीय भोजपुरी काफी धनी बा । एकरा के अच्छा से जानकारी लेवे खातिर निम्न उपविभाग कइल मोनासिब बा –

(a) महाकाव्य
(b) गीति काव्य
(c) खण्ड काव्य
(d) गजल
(e) कविता संग्रह

(a) महाकाव्य – अभी तक के अध्ययन आ विश्लेषण के बाद ई ज्ञात होता कि नेपालीय भोजपुरी साहित्य में एकमात्र महाकाव्य बा – 'धंधोर' जवन गोपाल अश्क के कलम से वि० सं० २०५० (१९९३) में लिखाइल दृष्टिगोचर बा । एकर चर्चा एह कारण अउरी कइल जरूरी बा कि एकरा के नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान (जवन सरकार के एकमात्र प्राज्ञिक प्रतिष्ठान ह) प्रकाशनार्थ स्वीकार कइले बा आ प्रेस में भेज चुकल बा । वि० सं० २०४६ (ई० सन १९९८) में जब एक बार फेर नेपाल के राजनीति करवट बदललस आ प्रजातंत्र के पुनर्बहाली भइल तब नेपाल में व्याप्त ३० वर्ष के अन्हरिया-काला कानून आ पीड़ा आदि के विपय वनाके धँधोर लिखाइल । एह महाकाव्य में सामाजिक रीति-कुरीति, प्रेम, उत्सर्ग, कवि जीवन, राजनैतिक अवस्था आदि प्रमुख विषय के रूप में आइल बा ।

(b) गीति काव्य – नोपालीय भोजपुरी साहित्य में पहिल पहिल वि० सं० २०५१ (ई० सन १९९४) में गोपाल अश्क के 'कवि के जनमकुंडली' लिखाइल जवन कि भोजपुरी साहित्यकार भोला प्रसाद आग्नेय के शब्द में भोजपुरी साहित्य के एगो अद्वितीय पुस्तक ह। एह में कवि आ कवि जीवन से सम्बंधित सामाजिक, मानसिक, आर्थिक, व्यक्तिगत अवस्था के भावपूर्ण वर्णन बा । १९ गो गीत संगृहीत बा । एकरा बाद ई० सं० १९९४ में ही आश नारायण प्रसाद अशोक के 'अशोक के कड़ी' प्रकाशित भइल जेमें प्रेम के संयोग आ वियोग पक्ष के बहुत सजीव भावपूर्ण गीत संगृहीत बा । वि० सं० २०५३ (ई० सन १९९६) में पुरुपोत्तम शर्मा के गीत संग्रह 'घोपणा पत्तर' परिलक्षित होखता । एह में मानवाधिकार के गीत के भोजपुरी अनुवाद आ कुछ मौलिक गीत संगृहीत बा। एह तरे नेपालीय भोजपुरी साहित्य में अभी ले (क) कवि के जनमकुंडली (ख) अशोक के कड़ी आ (ग) 'घोपणा पत्तर' गीत संग्रह प्रकाशित बा।

(c) खण्डकाव्य – उमा शंकर द्विवेदी 'दधीचि' नेपालीय भोजपुरी साहित्य के प्रथम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खण्डकाव्यकार के रूप में स्थापित बाड़े । वि० सं० २०३८ (ई० सन १९८०) में इनकर खण्डकाव्य 'विदागिरी' प्रकाशित भइल । ओकरा वाद वि० सं० २०४७ (ई० सन १९९०) में संजय कुमार श्रीवास्तव के 'कुँआर मेंहदी' आ गोपाल अश्क के 'कजरी' प्रकाशित भइल । 'कजरी' के समीक्षक राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' एकरा के प्रेम आ वेदना के सशक्त अभिव्यक्ति आ मुकुन्द आचार्य भोजपुरी के सुन्दर फूल कहल । 'कुँआर मेहदी' प्रेम परक खण्डकाव्य रहल । आश नारायण प्र० अशोक के 'परिणाम' 'सगुन' में आ बाकी अंश 'प्रभातवाणी' में धारावाहिक रूप में प्रकाशित भइल । अर्थात् नेपालीय भोजपुरी साहित्य के चार खण्डकाव्य यथा 'विदागिरी' 'कजरी' 'कुँआर मेहदी' आ 'परिणाम' दृष्टिगोचर बा । .

(d) गजल – एक दिसाईं पत्र-पत्रिकन में प्रकाशित गजलन के अतिरिक्त अभी ले नेपाल में पुस्तकाकार 'तोहरे वदे' आश नारायण प्र० अशोक के आ 'अभी बाकी बा' गोपाल अश्क के प्रकाशित भइल बा, वि० सं० २०५४ (ई० सन १९९७) में । गजल के लायक नेपाल के भोजपुरी भूमि काफी उर्वरा रहल बा । गोपाल अश्क के गजल भारत के प्रतिष्ठित पत्रिका 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' (पटना) आ 'भोजपुरी भाषा सम्मेलन पत्रिका' (देवघर), नेपाल के पत्रिकन-नव प्रज्ञापन (काठमाण्डौ) गामधर (जनकपुर) में प्रकाशित बा।

(e) कविता संग्रह – नेपालीय भोजपुरी साहित्य में पं० दीप नारायण मिश्र के 'अँजुरी के फूल' (वि० सं० २०३९ सन १९८२), 'फूलझरी' आ 'दोहा नीति सार' (वि० सं० २०४६, ई० सन १९८९) में प्रकाशित भइल बा । एकरा बाद वि० सं० २०५० (ई० सन १९९३) में पुरुषोत्तम शर्मा के 'जनता के मत चिदाव बाबू' आ वि० सं० २०५३ (ई० सन १९९६) में विश्वम्भर कुमार शर्मा के 'वसन्त इहाँ आ ना सकल' प्रकाशित भइल बा । एगो बात कहल बहुत जरूरी बा कि विश्वम्भर कुमार शर्मा (२०५३) के कविता के भावभूमि, शैली, आदि समकालीन बा । समकालीन कविता में पाए जानेवाला इनका कवितन में गुण समाहित बा ।

(iii) कथा – कथा के दिसाईं भी नेपालीय भोजपुरी साहित्य काफी उन्नत बा । 'सनेस' आ 'गमक' के प्रकाशन से उभरल कथाकार लोग में शिवशंकर प्र० रौनियार, गोपाल अश्क, मुकुन्द आचार्य, आश नारायण प्र० अशोक, चन्द्र किशोर झा, गजल झा, भाग्य नाथ गुप्ता आदि प्रमुख बाड़े । शिव शंकर प्रसाद रौनियार नेपाल के प्रथम भोजपुरी कथाकार हउवन । उन्हकर 'खानदानी लड़की', 'दो गज जमीन के नीचे', 'प्रेम के वेदी पर' काफी चर्चित रहल । चन्द्रकिशोर झा के 'समय के पहिया' (गमक, अंक-१, वर्ष - १) अतना नीमन उतरल कि एकर नेपाली अनुवाद 'समकालीन साहित्य' (नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान के पत्र) में प्रकाशित भइल । वि० सं० - २०५३ (ई० सं० १९९६) में गोपाल अश्क के 'नइहर के चुनरी' (कहानी संग्रह) प्रकाशित भइल जवना में 'जहर भरल सिन्होरा', 'ना ना', 'नइहर के चुनरी' 'तिरियाहठ', 'ई का भइल', 'दुरी नजदीकी', 'फगुआ', 'प्रणाम पंडी जी' आ 'खोइछा' कुल नौ गो कहानी संगृहीत बा ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एकर समीक्षा करत डॉ० गंगा प्रसाद अकेला (जामधर, जनकपुर) कहले बाड़े कि खोईछा में देखावल राह अनुकरणीय बाटे । एक तरे नेपालीय भोजपुरी साहित्य में अभी ले पुस्तक के रूप में 'नइहर के चुनरी' ही परिलक्षित बा। लघुकथा के ओर भी इहाँ के कलम अग्रसरित बा । गोपाल अश्क के पहिलका लघुकथा 'धनिया' (१९९०) 'सगुन' में प्रकाशित भइल । ओही में प्रकाशित 'कवि' से लघुकथा के ओर रुझान बढ़ल । पटना से आचार्य पाण्डेय कपिल के सम्पादकत्व में प्रकाशित 'एक मुट्ठी लाई' (लघु कथा संग्रह) में गोपाल अश्क के 'का जाने काहे' आ आश नारायण प्र० अशोक के 'आपन घर' संगृहीत बा । एह तरे लघुकथा के प्रणयन के भी शुरूआत भइल बा ।

(iv) निबंध-लेख-समीक्षा - पं० दीप नारायण मिश्र, गोपाल अश्क, मुकुन्द आचार्य, आश नारायण प्र० अशोक, चन्द्रकिशोर झा, विश्वम्भर कु० शर्मा, भाग्य नाथ गुप्ता आदि प्रमख रूप में बा लोग जे निबंध, लेख, ललित निबंध आ समीक्षा में भी कलम चलावता । पं० दीप नारायण मिश्र के 'भोजपुरी संस्कृत के केतने नियरे (सेतु), गोपाल अश्क के 'नेपाल में भोजपुरी : एक अध्ययन (भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, पटना) मुकुन्द आचार्य के 'प्रेम कहीं एनही भुलाइल बा' (गमक), विश्वम्भर कु० शर्मा के 'नेपाल में भोजपुरी साहित्य के स्थिति' (सयपत्री); भाग्य नाथ गुप्ता के 'नेपाल में भोजपुरी पत्र पत्रिका के स्थिति (नव पल्लव) आदि चर्चित रहल बा । मुकुन्द आचार्य आ गोपाल अश्क अइसन निबंधकार लेखकार बा लोग जे एक तरफ भोजपरी में लेख निबंध लिख के भोजपुरी में एह विधा के भण्डार भरता लोग त दोसरा तरफ नेपाली भाषा में भोजपुरी भाषा साहित्य कला आ संस्कृति के बारे में लिख के भोजपुरी के प्रतिष्ठा दियावता लोग । गोपाल अश्क के - भोजपुरी भाषा मा हास्य-व्यंग्य (दैनिक कान्तिपुर, काठमाण्डौ) में प्रकाशित आ प्रसंशित बा।

(v) नाटक - नेपालीय भोजपुरी साहित्य के प्रथम नाटककार पं० रामचन्द्र चतुर्वेदी हईं आ प्रथम प्रकाशित नाटक 'माधुरी' हवे। एकरा बाद नाटक विधा के सशक्त हस्ताक्षर में गोपाल अश्क आ मुकुन्द आचार्य परिलक्षित बाड़े । गोपाल अश्क के प्रथम प्रकाशित एकांकी नाटक - 'वाह रे बेटा' सगुन में प्रकाशित भइल । ओकरा बाद भेष बिना के भाव, ऊँट आइल त पहाड़ का नीचे, तलाक के बाद आ केंवारी ना खुलल गमक में प्रकाशित बा । प्रकाशित त ना बाकिर मंचन पर सफल भइल नाटक में - मुकुन्द आचार्य के - 'जनम भइल शैतान के' आ गोपाल गिरि के 'अब फरियाई' परिलक्षित बा । नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान के राष्ट्रीय नाटक महोत्सव में मुकुन्द आचार्य आ डॉ० राम प्रवेश कुँअर के नाटक प्रदर्शित बा ।

(vi) शोध ग्रन्थ - नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान आपन विद्वत वृति के तहत भोजपुरी भाषा आ साहित्य पर शोध ग्रन्थ तैयार करवा के प्रकाशित कर रहल बा । एह सन्दर्भ में मुकुन्द आचार्य के 'भोजपुरी गद्य-साहित्य 'आ' भोजपुरी उखान टुक्का' (वि० सं० -२०५३, ई० सन १९९६) प्रकाशित आ उल्लेखनीय बा । गोपाल अश्क से ओ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कार्यक्रम के तहत 'नेपालीय भोजपुरी भाषा र साहित्य को इतिहास (वि० सं० २०५४, ई० सन १९९७) प्रकाशनार्थ स्वीकृत बा। एकरा अलावे नेपालीय समकालीन भोजपुरी कविता भी एही प्रतिष्ठान के द्वारा प्रकाशनार्थ स्वीकृत बा। एकर सम्पादक गोपाल अश्क बाड़े। भोजपुरी के शब्द कोश, व्याकरण, लोककथा पर काम हो रहल बा, जेमे मुकुन्द आचार्य आ गोपाल अश्क काम कर रहल बाड़े।

अन्य – नेपालीय भोजपुरी साहित्य के श्रीवृद्धि करे में भोजपुरी संघ, संस्था, नेपाल के सरकारी निकाय (रेडियो नेपाल, नेपाल टेलीविजन) आदि के भी सहयोग बा। नेपाल रेडियो से भोजपुरी भाषा में समाचार प्रसारण आ साहित्यिक कार्यक्रम 'संगम', के प्रसारण हो रहल बा। नेपाल टेलीविजन से 'करवट' 'ई कइसे भइल' (कथा-पटकथा-गीत-मुकुन्द आचार्य) आ जानकी (कथा-पटकथा-संजय कुमार श्रीवास्तव) प्रसारित हो चुकल बा। नेपाली+भोजपुरी टेलीफिल्म 'राप' आ 'अलिखित' (कथाकार डॉ० ध्रुबचन्द गौतम) के प्रसारण हो चुकल बा। अतने ना, नेपाल के फीचर फिल्म, जइसे, 'ज्वाला' आदि में भोजपुरी गीतन के प्रयोग कइल बा आ नीमन से कइल बा। ई स्वतंत्र लेख के विषय बा।

नेपाल में भोजपुरी भाषा आ साहित्य के विकासार्थ निम्नांकित संघ संस्था स्थापित आ संचालित बा-

१. नेपाल भोजपुरी समाज – अध्यक्ष – पं० दीप नारायण मिश्र,
२. नेपाल भोजपुरी साहित्य कला परिषद् – अध्यक्ष – नागेन्द्र प्रसाद कानू
३. नेपाल भोजपुरी प्रतिष्ठान – अध्यक्ष – डा० वंशीधर मिश्र
४. नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान 'भोजपुरी समिति' –अध्यक्ष – डॉ० ध्रुवचन्द्र गौतम।

पत्र-पत्रिका – नेपाल में भोजपुरी भाषा आ साहित्य के विकास के वास्ते समर्पित एक मात्र पत्रिका 'गमक' (सम्पादक- गोपाल अश्क) बा। आजकल विजय प्रकाश बीन के सम्पादन में फेर से 'आजु के समाद' (समाचार पत्र सप्ताहिक) शुरू भइल बा। एकरा अलावे जवन पत्रिका भोजपुरी के सम्मान के साथ स्थान देला ओमे मुख्य बा- नव पल्लव (सं० धमेन्द्र भट्टाई-नेपाली, विश्वम्भर कु० शर्मा – भोजपुरी आ चन्द किशोर झा- मैथिली)। एकर दोसरका अंक बाल साहित्य पर प्रकाशित बा। विविध भाषा वाला आउर पत्रिका बा, नव प्रज्ञापन (काठमाण्डो), गाम घर (जनकपुर) प्रभातवाणी, आ सार्थक (वीरगंज) जवना में भोजपुरी के रचना छपेला।

निष्कर्ष के तौर पर ई कहल जा सकता कि वि० सं० २००८ साल से भोजपुरी साहित्य के परम्परा शुरू हो के २०५४ तक आवत आवत काफी समृद्ध हो चुकल बा आ सम्भावना बड़ा जोरदार बा। एगो मिशन के तहत काम हो रहल बा, जवन कि शुभ संकेत बा। इतिअलम्।

☐ रेशमकोठी, वीरगंज, (नेपाल)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फार्म - ४
(निगम ८ देखिये)

१. प्रकाशन स्थान -- -- पटना

२. प्रकाशन अवधि -- -- मासिक

३. मुद्रक का नाम -- -- पाण्डेय कपिल
क्या भारतीय नागरिक हैं ? -- हाँ
(यदि विदेशी हैं तो मूल देश) - X
मुद्रक प्रेस का नाम -- कर्म प्रेस
पता -- -- -- लोदीपुर, पटना-८००००१

४. प्रकाशक का नाम -- पाण्डेय कपिल
क्या भारतीय नागरिक हैं ? -- हाँ
यदि विदेशी हैं तो मूल देश) -- X
पता -- -- अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन
इन्द्रपुरी, पटना - ८०००२४

५. सम्पादक का नाम -- पाण्डेय कपिल
क्या भारतीय नागरिक हैं ? -- हाँ
यदि विदेशी हैं तो मूल देश) -- X
पता -- -- अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन
इन्द्रपुरी, पटना - ८०००२४

६. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों । — अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन
इन्द्रपुरी, पटना - ८०००२४

मैं पाण्डेय कपिल, एतद्द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गए विवरण सही हैं ।

दिनांक १ मार्च १९९८ ह०/- पाण्डेय कपिल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नेपालीय भोजपुरी लेखक

प्रस्तोता - गोपाल अश्क

१. अच्छे लाल प्रसाद,
नकटुआ, बारा, नेपाल ।
पत्रिका में कविता प्रकाशित ।

२. आश नारायण प्रसाद अशोक
विमलेन्दु मेडिसिन कर्नर,
कुम्हालटोल, वीरगंज, नेपाल ।
'अशोक के कड़ी' आ 'तोहरे वदे'
का साथे साथ अनेक गीत गजल
कथा, लेख पत्रिकन में प्रकाशित।

३. आशा राम आत्मा,
इनर्वा सिरा, बारा, नोपाल।
कविता प्रकाशित ।

४. ईश्वर शर्मा रिमाल,
गहवा, बीरगंज - १०, नेपाल।
कविता प्रकाशित ।

५. उपेन्द्र साहनी
समनपुर, रौहतट, नेपाल
कविता प्रकाशित ।

६. उमाशंकर द्विवेदी 'दधीचि'
बहुअरी, पर्सा, नेपाल ।
'विदागिरी (खण्ड-काव्य)
के साथे साथ कविता
आ कथा प्रकाशित।

७. उमेश चन्द्र ठाकुर
महाप्रबंधक-मेघा उलन मिल्स
प्रा० लि०
श्रीपुर, वीरगंज, नेपाल ।
कविता प्रकाशित ।

८. कपिलदेव तिवारी माधुर्य
केडिया आँखा अस्पताल
लिपनी माल, पखनीपुर, नेपाल।
कविता प्रकाशित ।

९. कालीकान्त झा 'तृषित'
प्रबंधक, नेपाल एरो टेकश्वर
लिपनी माल, पखनीपुर,
पर्सा, नेपाल।
कविता प्रकाशित ।

१०. (श्रीमती) गजल झा
द्वारा - चन्द्रकिशोर झा
श्रीपुर, वीरगंज, नेपाल
कविता प्रकाशित ।

११. डा० गंगा विष्णु सल्याणी
सल्याणी क्लिनिक
कालीमाटी, काठमांडौ, नेपाल ।
कविता प्रकाशित ।

१२. गोपाल अश्क
प्रधान सम्पादक : गमक
रानीघाट, वीरगंज, नेपाल
-कजरी (खण्ड काव्य), कवि
के जनमकुँडली (गीति-काव्य)
अभी बाकी बा (गजल-संग्रह)
आ नइहर के चुनरी (कहानी
संग्रह) के साथे साथ अनेक
कविता गीत, गजल, कथा,
एकांकी, नाटक, लेख, निबंध पत्र-
पत्रिकन में प्रकाशित ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१३. गोपाल ठाकुर
हिन्दी विभाग
रेडियो नेपाल
सिंह दरबार, काठमाण्डौ
गीत, कविता प्रकाशित ।

१४. चन्द्रकिशोर झा
मेघा उलन मिल्स प्रा० लि०
श्रीपुर, वीरगंज, नेपाल ।
कविता, कथा, लेख प्रकाशित ।

१५. जगदीश पंकज
ने० रा० प्र० वि० हरपुर बलुवा
बारा, नेपाल।
कविता प्रकाशित ।

१६. जगदीश प्रसाद सर्राफ
रेशमकोठी, वीरगंज, नेपाल ।
कविता प्रकाशित ।

१७. दिनेश नेपाली
द्वारा - श्री शुकदेव भगत,
रानीघाट, वीरगंज, नेपाल
कहानी, लघु कथा, कविता
प्रकाशित ।

१८. धमेन्द्र भट्टराई,
नयाँ वस्ती, श्रीपुर,
वीरगंज, नेपाल ।
काव्य प्रकाशित ।

१९. (डा०) ध्रुबचन्द्र गौतम
सदस्य सचिव
नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान,
कमलाक्षी, काठमाण्डौ, नेपाल ।
गीत, कविता प्रकाशित आ
गीत फिल्म में समाविष्ट ।

२०. नागेन्द्र प्रसाद कानू
नूतन मिल्स स्टोर्स
लोहारपट्टी, वीरगंज, नेपाल ।
पपिहरा (उपन्यास) प्रकाशित ।

२१. नागेन्द्र वियोगी
मिनी लैंड ई० बो० स्कूल के पछाड़ि
पानीटंकी एरिया, वीरगंज, नेपाल ।
कविता प्रकाशित ।

२२. (सुश्री) नीतिका जायसवाल
द्वारा-ओमप्रकाश जायसवाल
क्याम्पस रोड, आदर्शनगर, वीरगंज ।
कविता प्रकाशित ।

२३. नन्दन अर्याल 'नन्द भाई'
बधवन बाजार, बारा नेपाल ।
कविता प्रकाशित ।

२४. नन्दन मिश्र
बगही, पर्सा, नेपाल ।
कविता प्रकाशित ।

२५. पुरुषोत्तम शर्मा
नया बस्ती, श्रीपुर, वीरगंज, नेपाल।
'जनता के मत चिढाव बाबु' आ
'घोषणा पत्तर' के साथ साथ अनेक
कविता पत्रिकन में प्रकाशित ।

२६. (पं०) दीप नारायण मिश्र
रेशमीकोठी, वीरगंज, नेपाल ।
'अंजुरी के फूल', 'फूलझरी' आ
'दोहा नीति सार' के साथे साथ
अनेक कविता, कथा, लेख,
निबन्ध पत्र पत्रिकन में प्रकाशित ।

२७. पृथ्वी विद्या
विर्त्ता - ४, वीरगंज, नेपाल ।
कविता प्रकाशित ।

२८. (सुश्री) प्रभावती कुमारी,
द्वारा-पृथ्वी विद्या
विर्त्ता - ४, वीरगंज, नेपाल ।
कविता प्रकाशित ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२९. बच्चन प्रसाद,
जिला उ० मा० विद्यालय
पोखरिया, नेपाल ।
कविता प्रकाशित ।

३०. बह्मदेव यादव
गंगा नगर
सिम्रौनगढ़, बारा, नेपाल ।
कविता प्रकाशित ।

३१. विजय प्रकाश 'बीन'
संपादक -आज के समाद
(समाचार-पत्र)
कुम्हालटोल, वीरगंज, नेपाल ।
कविता प्रकाशित ।

३२. विनोद कुमार तिमिल्सिना,
कवि टोल, तेजारथ टोल,
श्रीपुर, वीरगंज, नेपाल ।
कविता प्रकाशित ।

३३. (प्रा०) विश्वम्भर कुमार शर्मा
ठाकुर राम बहुमुखी क्याम्पस
वीरगंज, नेपाल ।
'वसन्त इहाँ आ न सकल' के
साथे साथ कविता, लेख, समीक्षा
आदि प्रकाशित ।

३४. वीरेन्द्र प्रसाद कानू
गहवा, वीरगंज, नेपाल ।
कविता प्रकाशित ।

३५. भाई राजा विष्ट
तेजारथ टोल, श्रीपुर
वीरगंज, नेपाल ।
कविता प्रकाशित ।

३६. (प्रा०) भाग्य नाथ गुप्ता
गहवा - १०, वीरगंज, नेपाल ।
कविता, समीक्षा, लेखादि,
प्रकाशित ।

३७. मथुरामान सिंह श्रेष्ठ,
सम्पादक-अर्थ जगत
वीरगंज, नेपाल ।
कविता प्रकाशित ।

३८. मुहम्मद मूनीफ मासूम
श्रीपुर, वीरगंज, नेपाल ।
गीत, गजल प्रकाशित ।

३९. मुकुन्द आचार्य
कलैया-४, बारा, नेपाल ।
भोजपुरी गद्य-साहित्य आ
भोजपुरी उखान टुक्का
(नेपाली में) के साथ अनेक
कविता, कथा, लेख आदि
प्रकाशित ।

४०. माधव प्रसाद गौतम
कलैया, बारा, नेपाल ।
कविता प्रकाशित ।

४१. मिथिलेश कुमार घायल
बरियारपुर मैनी, बारा, नेपाल ।
कविता, गजल प्रकाशित ।

४२. मोहन लाल चौधरी
अध्यक्ष रा० प्रजातंत्र पार्टी
जिल्ला कार्यालय, पर्सा, नेपाल ।
कविता प्रकाशित ।

४३. राजेन्द्र प्रसाद बरनवाल
रानीघाट, वीरगंज, नेपाल।
कविता, लेख प्रकाशित ।

४४. राम निवास यादव
बहुअरी, पर्सा, नेपाल ।
कविता प्रकाशित ।

४५. रामचन्द्र बरनवाल
आदर्शनगर, वीरगंज, नेपाल ।
कविता प्रकाशित ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

४६. राधा कृष्ण गुप्ता
दिलेर सागर नौतनी
नौतन, बहुअरी, बारा, नेपाल ।
मीत, कविता, प्रकाशित ।

४७. रामेश्वर मेहता
सिम्रौनगढ़ बाजार
बारा, नेपाल ।
कविता प्रकाशित ।

४८. रामसुन्दर श्रेष्ठ
समनपुर, रौतहट, नेपाल ।
कविता प्रकाशित ।

४९. राजेश पाण्डेय
सिद्धार्थ मा० विद्यालय
श्रीपुर, वीरगंज, नेपाल ।
कविता प्रकाशित ।

५०. रामराज यादव
सम्पादक- प्रभातवाणी
श्रीपुर, रानीघाट, वीरगंज, नेपाल ।
कविता प्रकाशित ।

५१. लक्ष्मण प्रसाद मदेशिया
नारायणघाट
चितवन, नेपाल ।
कविता, लेख प्रकाशित ।

५२. वेद प्रकाश त्रिपाठी
बेतकुइया गा० वि० सं० - ३
जिल्ला - रूपन्देही
मर्चवार, नेपाल ।
कविता प्रकाशित ।

५३. (डा०) शशिभूषण बरनवाल
आदर्शनगर, वीरगंज, नेपाल ।
कविता प्रकाशित ।

५४. शिवलाल साह
हरपुर बलुवा, बारा, नेपाल ।
कविता, एकांकी प्रकाशित ।

५५. शिवशंकर प्रसाद रौनियार
महावीर स्थान, वीरगंज, नेपाल ।
कहानी प्रकाशित ।
प्रथम कहानीकार ।

५६. शोभा कान्त झा
छपकैया, वीरगंज, नेपाल ।
कविता प्रकाशित ।

५७. संजय कुमार श्रीवास्तव 'निशीथ'
रेशमकोठी, वीरगंज, नेपाल ।
'कुआँर मेंहदी' (खण्डकाव्य)
के साथे साथ
कविता लेख प्रकाशित ।

५८. सतीश कुमार सजल
रामचन्द्र भगत मा० विद्यालय
पकहाँ, पर्सा, नेपाल ।
गीत प्रकाशित ।

५९. सफीक मिया अंसारी
बबुआइन वार्ड नं० ७
बारा, नेपाल ।
कविता प्रकाशित ।

६०. सुनील कुमार
बरियारपुर, मैनी, बारा, नेपाल ।
कविता प्रकाशित ।

६१. सोहन थापा
वीरगंज, नेपाल ।
कविता प्रकाशित ।

६२. हरि नारायण शोषित
सुगौली, पर्सा, नेपाल ।
कविता प्रकाशित ।

६३. हृदयानंद आवारा
वीरगंज - १७, नेपाल ।
कविता प्रकाशित ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गोपाल ठाकुर

(1)

हमनियों नेपाली हईं

चुरिया के गोदी में
मेची से महाकली तक
सोना के चटाई पर
लांगट भूखे सूतेवाला
करम के बड़, नसीब के छोट
काम से देशी, नाम से देशी
हमनियों नेपाली हईं ॥१॥

जमीन हमनी के पूँजी
खेती हमनी के रकम
सबसे बेसी राजस्व
देवल हमनी के धरम
साव के ब्याज, हाकिम के सलामी,
जमिन्दार के सगुन, पुरोहित के बानगी
ई सब के बाद हमर
तय होला खानगी
अइसन खुशहाली में जियल
हमनियों नोपाली हईं ॥२॥

समतल बा धरती हमर
सड़क पहाड़ पर बने
खेती हमर करम बाकिर
पानी हिन्दुस्तान में बहे
अपने देश अपने जिला में
गाँव से गाँव जाए खातिर
मोगलनिया रेल चढ़त खुनी
बोका, बुद्धू, गँवार के
नाम से जानल जाए वाला
हमनियों नेपाली हईं ॥३॥

इहाँ त पहाड़े पहाड़ बा
झट से लोग कह देला
आ पहड़िये लोग नेपाली हउएँ
एह बात के मान्यता खातिर
तराईवासी के मदिसे, मर्स्या
आ अपना के नेपाली
बड़ा आनन्द से कह देला
बाकिर खाँटी नेपाली होत भी
नेपालीपन से बहिष्कृत रहल
हमनियों नेपाली हईं ॥४॥

भाषा आ संस्कृति के
विकास के नारा देत
अब त हमार भाषा आ संस्कृतियो पर
बलात्कार हो रहल बा
जइसे बरियतिया के पेट में
बाकिर नचनिया के नाक पर
दही चिउरा चिनी छिटाला
ओइसहीं
बलात्कृत भाषा आ संस्कृति
हमार असन्तोष पर छिटल जाला
एह से,
अपने बाप के नजर में
पछलगुवा बेटा के रूप में रहल
हमनियों नेपाली हईं ।

□ □ □

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(2)

खबरदार

ुनऽतानी आ गइल नया जमाना।
ुकुम ना चली अब केहू के मनमाना।।

बिना खाइल क्षुधा आ बिना देखल अँखिया
कइसे मानी सुन के खाली मीठ मीठ बतिया
'दि कैट सैट औन दि मैट' होला पढ़ाई,
हिन्दू देश में काहे के संस्कृत पढ़ावल जाई !

मातृभापा में प्रथम शिक्षा लिखल बा विधान में
बहुदल व्यवस्था निर्दल हाकिम खोट बा ईमान में
मगर ई बात चली तब ले जब ले हमनी सहत जाएम
बेईमान लोग के जी हजूरी में जब लें दिन बिताएम ।।

जौन झाड़ू पंचायत बहरलक बाटे अबहीं हाथ में,
बहारत चली कूड़ा कर्कट जे जे परी पाँत में ।
खबरदार जे कोई मारी हमरा भेष भाषा पर ताना
नामो निशान खाक होई करिया इतिहास के पाना ।।

□ □ □

एक मुट्ठी लाई

(भोजपुरी के एकसठ लघुकथाकारन के लघुकथा संग्रह)

दाम- पचास रुपया / सम्मेलन सदस्य खातिर पचीस रुपया

डाक खर्च अलग

प्रकाशक

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

इन्द्रपुरी, पटना-८०००२४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चन्द्र किशोर झा

(1)

गाँव

गाँव,
योजना आयोग के
वातानुकूलित कक्ष में
सुसज्जित मड़ई के
तस्वीर ना ह।

गाँव,
ठाकुर के पुरनका हवेलियो ह
जहाँ धुपल बा अन्तहीन दर्द
भूखल-पियासल खेत
आ झुराइल किसान के सपना।

गाँव,
होरी के रंग, फगुआ के भंग
भउजी के उमंग, आ खुशीयाली में बाधा
महाजनी के खाता।

गाँव,
दुर्गा चमार के पतोह लछमिनिया के चीख
चिरुआ भर तेल ला तरसत मांगत भीख
माईराम के इंगुर टिकुली
आ ब्लाउज ला जजमनिका
पंडित सोनकी ओझा के पोथी में लपटाइल
वेद आ पुराण।

गाँव,
रोज रोज कटात
कटात-कटात भइल ठूँठ
बड़ा बरगज, मलगुजार के बगैचा।
पटवारी के वृद्धि में चोन्हाइल
विकास के एगो लमहर मंजिलहीन यात्रा।

गाँव,
भूख के बिरहा
अभाव के रूवाई में मस्त
पीड़ा के भोर।

गाँव,
गाँव ह गाँव !!
जहाँ बिछल बा तरई,
जीयल बा धुर।
होखता पंचायती !
खोलले बा -
पंजा
बाघ।

□ □ □

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(2)

चदरिया झीनी रे झीनी

आदमी के सूखल जिनिगी पर
एगो यक्ष प्रश्न
रेंगनी के मुद्रा में उगल
आ पुछलस –
'ढाई आखर प्रेम' ?
कबिरा आजु भी प्रतीक्षा
क रहल बाड़े
बाकिर आशा के बस स्टौप पर ।
मध्य रात के सुनसान बा !
मौलश्री के सुकुमार फूल अइसन
झर रहल बाटे समय
आ गड़कल जा रहल,
समय के पहिया पर,
युग ।
आँखिन देखे आउर कानन सुने वाली
बात करेब त,
सामाजिक स्वतंन्त्रता के
सन्दर्भ में
दूध के मक्खी जस
दूर फेंकल जा रहल बा
आम आदमी ।
केतना घुटन भरल बा
तनी नियरे निहार के देख लीं ।
डेग–डेग पर
कुँआ खन रहल बाड़े
खास लोग ।
पास के लोग !!
रोटी ला, मशीन के बीच
पिसात आदमी के
जीवन–पृष्ठ से
बेबसी के शब्द
चिरई बन के
मूल्य के फुनगी पर बइठेला
आ गावे लागेला
"पूँछ जो पकड़ै भेंड को,
उतर्‍या चाहै पार ।"
तब,
ईमान के चौराहा पर
मूल्य के दर्दनाक नीलामी होखेला
आ एही तरहे
बेदाग चादर
गुलर के फूल हो जाला !
मन ना रंगवले,
रंगवले जोगी कपड़ा !
आजु बेंग के छोटे नपवला पर
साँप बिल में से फन उठवले बा ।
सुनगब, धन्हकब, जरत रहब
आदमी के नियति हो गइल ।
रोप लेहले बा गमला में तनाव के,
ई बात कबीर के बताई केहू तरे ।

□ □ □

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उमाशंकर द्विवेदी 'दधीचि'

बाद के बात

अन्हरिया रात
घटा घनघोर
बिजुली चमकत हो ।

फूस के मड़ई
छान्ह पर लती
पात पर टप्प टप्प
बुनि बरसत हो ।

पेट में अन्न
देह पर बस्तर
आँख में ज्योति
मुंह में मसाला गमकत हो ।

पतरी धनिया
चान सुरुजवा
अँखियन में काजर
लिलरा में बुन्ना दहकत हो ।

कथा कहानी
गीत कवित्त
राग विहार
सब बिसरत हो ।

भर भर अंकवार
सब नेह दुलार
एही रहिए
अब सब गुजरत हो ।

कहीं बात पुरान
सभी सनेस महान
एक हम अकेला
देश देशावर फिरत हो ।

ना जात ना बात
भाव चरित्र के
नीचे नीचे गिरत हो ।

□ □ □

(श्रीमती) गजल झा

(1)

सोना के हसुली

कवरा पर जीयत जिनिगी,
टुकुर-टुकुर ताकेले
मन के कंवारी लगा के ।
नोचा चोथा रहल,
जनम-जनम से,
मन के महुआ फुलाइल ।
हँसी आवता
पुरुपन के कदरदानी पर ।

पाण्डव के दाव,
हमार भाव ।
कइसे कहीं, बसल बिया जिनिगी
जिनिगी के दरकल टाटी के
फाँफर में,
डेरा जमवले बा
करिया कुच कुच भाग,
ओही में उजबुजा के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जब कभी
हाथ बढावेलीं,
त मिलेला सोना के हसुली ।
ऊ कहेले-
'ई मेहरारू के सेहन्ता ह'
मुदा, हम कहेलीं-
गर में सोना के हसुली
बिरनी के खोंता ह ।

□ □ □

(2)

आपन वसंत

वसंत त हर बरिस आवेला,
बाकिर ई हमर जिनिगी के
एकइसवाँ वसंत ह !
वसंत
सिर्फ रितुए ना
एगो सपना ह, एगो संसार ह,
हमरा ला ।
बीतल वसंत आ ई वसंत में
ज्यादा अंतर नइखे
यदि अंतर बा, त
हमर वयस में एक बरिस अउरी जुड़े में ।
केतना बरिस हो गइल
मालुमो ना चले
वसन्त हमरा में आइल बा !
कइसन वसंत ?
कुँवारी पतझर के ना होखो अन्त ?
खेत में फुलाइल पिअर सरसो
हमरा से पुछलख –
तोर हाथ कब पिअर होई ?
हम कहनी
तूं बँच जो ओला से
आ अच्छा दाम बिका जो
तबे नू हमर बाबूजी
बर किनिहन !
आ हम हँस देहनी
मनि, आकाश ओर देख के
सरसो उदास हो गइल ।

□ □ □

निरगुन बानी
(निरगुन सन्त कवियन के भोजपुरी पदन के संग्रह)
दाम - दस रुपया
प्रकाशक
अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, इन्द्रपुरी, पटना-८०००२४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धर्मेन्द्र भट्टराई

(१)

धर्म

जिनिगी से
हार के आत्महत्या करे खातिर
चलल एगो जोगी
रास्ता में मिलल एगो अठन्नी
दायाँ-बायाँ देख के
झट से रखलस अपन जेबी में
आ भुनभुनात
आगा बढल –
'राम नाम सत् हो ।',

□

(२)

राजनीति आ राजनीतिज्ञ

राजनीति के नैसर्गिक अर्थ
बरियार के ऊपर पहुँचल ह
ओही से,
दोसरा से भारी उठवावल ना चाहेवाला
दोसरा के मुड़ी के सीढ़ी ना बना पावेवाला
राजनीतिज्ञ होखहीं ना सकी
काहे कि राजनीति के सोझ अर्थ
'राज्य के नीति' भइलो पर
भारी ना उठववला पर
उ बरियार होखहीं ना सकी,
आ
दोसरा के मूड़ी पकड़ले बिना
उ ऊपर उठहीं ना सकी।

□

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विश्वम्भर कुमार शर्मा

(1)

जिन्दगी

मरद के व्यवहार से
क्रुद्ध हो के एक जनी
ऊँच घर के छत से
कूदे खातिर
सुरफुरात रहली
तब्बे
पाछा से
एगो छोट लइका
आँचर के कोरि
पकड़त
तोतलात
बोल
पड़ल
माई ।

□ □ □

(2)

देवता

निराकार
ओम्कार या
पत्थर के बनल
कवनो सुन्नर मुर्ती !
का ह देवता ?
कहीं-
देवता का ह ?
राम, कृष्ण, ईसा, या पैगम्बर
चन्दन, तुलसी, मठ-मंदिर या
चर्च-मस्जिद ?
देवता का ह?
पोंगा पंडित
नापाक इमाम
रउवे कहीं !
जब ईश्वर
सर्वव्यापी
अजर-अमर हउवें,
घट-घट में
विराजेलें,
तब
कोई
काहे जाला
मक्का-मदीना
बनारस-बद्रीधाम
पशुपतिनाथ ?
अपना ला कइल
जब कर्म आ
उहे दोसरा ला
कइला पर धर्म
हो जाला
तब, काहे खुलल बा
धर्म के पाठशाला ?
हमरा त बुझाता कि
देवता
लोग के
विचार हो गइल बा
आ विचार के,
लकवा मार देले बा ।

□ □ □

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुकुन्द आचार्य

(1)

बधाई बा !

बधाई बा !
अपने चुनाव जीत गइनी !

लोगवा पहिले कहत रहे-
ससुरा फोकटिया नेता ह,
हरदम चन्दे मांगेला !
जितला पर
कुछ ना गुदानेला !
जाईं,
झूठ-साँच क के
केहू लेखा सांसद हो नू गइनी,
बधाई बा !
अपने चुनाव जीत गइनी !

अपने त अब
केन्द्र में रहब
टी० भी० में लउकब त
हमनी अपन नेता कहब
ठीक बा,
अपने केन्द्र में रहब, त
इहाँ क्षेत्र में भी शांति रही,
लोगवा समझी -
नेताजी के प्रताप से शान्ति होला
अपने त जानते बानी
अपने इहाँ ना भइला से शान्ति होला
अपने आपन क्षेत्र छोड़ देहनी,
जिनिगी में इहे एगो नीमन काम कइनी,
बधाई बा !
अपने चुनाव जीत गइनी !!

अपने फिक्रि मत करीं
हमनी कार्यकर्त्ता पर विश्वास करीं
दाल, चाउर, नगदी, जिन्सी ?
सब इहाँ से जात रही
भ्रष्टाचार के छोट-बड़ सब काण्ड में
हमनिए के हाथ रही
मौका मिलल बा, कमा लीं
के पुछे जाता जे,
अपने विदेशी बैंक के केतना धइनी !
बधाई बा !
अपने चुनाव जीत गइनी !!

बिरोधी लोग त कहत रहेला,
भाला, बर्छी, कटुई
सब बहत रहेला
बिना लड़ाई-भिड़ाई के राजनीति होला ?
कान्ह में अब दुनाली बन्दूक होई
ना लटकावल जाई झोरा
लूक छिप के डकैती त होते रहे
अब डकैती के लाइसेन्सो पइनी !
बधाई बा !
अपने चुनाव जीत गइनी !!

□ □ □

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मारीं गोबर में लात !

हे भइला !
उत्तम खेती कहल जाला !
जेने फायदा होखे,
ओनही ढहल जाला !
किसान हईं त गांजा करी,
जिनिगी भर माजा करीं,
ठावां ठाईं पैसा फेकीं,
ऊपर से नीचे तक देखीं ।
के नइखे खात ?
मारीं गोबर में लात ॥ १ ॥

ए जी
अपने सेठ हईं ?
तब त जरूर
कानून आ प्रशासन से
अपनहीं जेठ हईं ।
मजाल बा कवनो के
जे अपने से करिहे बात ?
मारीं गोबर में लात ॥ २ ॥ ?

ओ हाकिम बाबू !
नमस्कार !
देश में अपनहीं के बा चमत्कार !
मुँह मारीं देश के
आ भाँड़ में जाय सरकार !
घूस कवनी देवे
खुश हो के रख लीं
ना पूछीं जात, ना पूछीं पात !
मारीं -गोबर में लात ॥ ३ ॥

ओ भाई जी !
अपने पकिया नेता हईं ?
तब त अपने
गिरगिट के खास बेटा हईं !
गिरगिट लेखा रंग बदलीं !
चमगादर लेखा ढंग बदलीं !
साँझ सबेरे दुनू टाइम
कुर्सी के जोड़ीं हाथ
मारीं गोबर में लात ॥ ४ ॥

तनि हेने देखीं
ई कवि हउवन
देश आ समाज के छवि हउवन !
माल ना मिले त
चूल्ही में कविता फूंक दिहन
अइसन कवि सम्मेलन के
अठन्निया पान लेखा
चबा के थूक दिहन
जहाँ माल मिली दउड़ल जइहन !
ना दिन देखिहन ना रात ।
मारीं गोबर में लात ॥ ५ ॥

एजी ! अपने खाली बानी
फिफ्टी परसेन्ट चापलूस
आ फिफ्टी परसेन्ट जाली बानी ?
तब स्टील के चमचा बन जाईं ।
मोंछ ना होखे त पोंछ उठा के
कवनो के सामने तन जाईं !
के पूछे फुटहा आ सतुआ !
दारू से कुल्ला करीं !
जलखई करीं मास भात !
मारीं गोबर में लात ॥६॥

□ □ □

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुरुषोत्तम शर्मा

नेपाल के विकास में महक उठीं महक उठीं

अंजोर दीं उहां जहां महान अंधकार बा
उबार दीं सँवार दीं जहाँ जहाँ उजाड़ बा ।।
लिलार झूर गाल के आकाश के हँसी त दीं ।
गरीब के दुआर में विकास जोत बार दीं ।।१।।

दयालु नेह से सदा महानो काम त करीं
उदार भाव से गरीब के तनी उठा त दीं ।
अड़ोस के पड़ोस के गरवा लगाईं प्रेम से,
विभेद जात-पात के निकाल फेंक चित्त से ।।२।।

अन्हार दिल में तनी अँजोर दीं अँजोर दीं
मदेश के पहाड़ के उधेड़ बून छोड़ दीं ।।
प्रपंच जाल फाड़ के सही त राह में चलीं
निरीह भाई-बन्धु के हलाल आज मत करीं ।।३।।

गरीब के उजाड़ चैन, बाँसुरी बजाई के,
सुते सकेम् कहाँ इहाँ ? हराम के कमाई से ।।
इ बात गाँठ पार के समाजवादि राह से
सदा चलीं सदा चलीं पवित्र प्रेम भाव से ।।४।।

कुराह ना कभी चलीं सुराह मस्त से चलीं
समाज के सुधार के अगाड़ी डेग भर चलीं
दहेज आ तिलक प्रथा इ कोढ़ के हटाई के
बहीन के पताहे के जिये के राह खोल दीं ।।५।।

शहीद जानकी लहू उबार दीं सँवार दीं
मुनेसरी सुनावती के आह आज बुझ दीं
जल्लाद भेद खोल के हुंकार के गरज पड़ीं,
नेपाल के विकास में महक उठीं महक उठीं ।।६।।

□ □ □

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आशनारायण प्रसाद अशोक

(1)

सावन गीत

घहर-घहर घहरे बदरा रे ।

बेबटिया पर धावल जावे,
रहि-रहि के नैना मटकावे ।
छितर-फितर देहिया अंगड़ावे,
शायद प्रियतम घर जतरा रे ॥

झिहिर झिहिर यौवन रस छलके,
ओंठ खोलि के, मुनि दुइ पलके ।
पान करेली जमि मुसुकी के,
आँचर से करि के छहिरा रे ॥

उजड़ल माँग सेनुरा लागल,
फल-फूलन से गोद भराइल,
बाँझिन पीर पराई भागल,
बहि जाये दुख के कजरा रे ॥

बदरा के पानी उमड़ल रे,
अह-जह में तब प्रीत भइल रे ।
कहली धरती मन ऊबल रे ।
जनि पसार एतना पथरा रे ॥

सावन खुदे सुहावन लागे,
सभका के मनभावन लागे ।
रहि-रहि के ललचावन लागे,
जब-जब यौवन के लहरा रे ॥

□ □ □

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गजल

आजु से मन के दिया रउआ जरावल छोड़ दीं ।
देखलीं अपना के अब अंगुरी देखावल छोड़ दीं ॥

लूट ले मिल के सभे अइसन अंजोरिया के मजा,
का लगल बा चान में, परदा उठावल छोड़ दीं ॥

कंठ सूखल बा जेकर, इमरित पियाई प्रेम के,
जे खड़ा सागर किनारे उनका उहँवें छोड़ दीं ॥

नींव के देखीं, बनल कइसे गिरिह ईमान के,
चमचमाहट के भरम में, दिल दुखावल छोड़ दीं ॥

आ गइल जे सामने भर बाँह उनका प्यार दीं,
याद में रह-रह के अब, लोरवा चुआवल छोड़ दीं ॥

का मिले उनका सतइला से, करेले प्यार जे
हो सके त साथ दीं, अरथी सजावल छोड़ दीं ॥

ईश के साखी बना, ईमान बेचे ला सभे,
हाथ में गीता धरा, किरिया खिआवल छोड़ दीं ॥

छा गइल दुख के बदरवा रे 'अशोकवा' चूप रह,
मौत के छाती प जिनिगी के रोआवल छोड़ दीं ॥

□ □ □

मानक भोजपुरी वर्तनी

लेखक—आचार्य विश्वनाथ सिंह

दाम : डिलक्स संस्करण ४० रुपया / सम्मेलन सदस्य खातिर २० रुपया

जन संस्करण ३० रुपया / सम्मेलन सदस्य खातिर १५ रुपया

डाक खर्च अलग

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, इन्द्रपुरी, पटना-८०००२४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उमेश चन्द्र ठाकुर

(1)

नीक-नोहर

जिनिगी के झुरमुट में
ओझराइल आदमी
तनि देर
नेह में नहाइल
ई प्रीत में बउराइल
ई का कम बा !

आदमी उहे बा
बाकिर
युग बदल गइल बा,

दौड़ा-दौड़ में
चुटकी भर समय बा
मुट्ठी भर काम बा !!

बाकिर
सपना के पकौड़ी
छाने में ओस्ताद
आदमी
जिनिगी सोहागिन के
जियरा जुड़ा देहलस
ई का कम बा ?

❑ ❑ ❑

(2)

मूक साक्षी

वातावरण विषाक्त हो गइल बा !
ना, बाकिर ई कहीं त
बकुला के पाँख अस सफेद साँच होई
कि आदमी के मन 'डम्पिड साइट'
हो गइल बा ।
समाज आ परिवेश
व्यक्ति से कंगारू के बच्चा अस
अलग नइखे हो सकत ।
आदमी के सूक्ष्म मन में
जहर घुल गइल बा,
आ मानवता के रक्तरंजित पाँख
क्षितिज पर छितरा गइल बा ।

नैतिकता कहीं भुला गइल बा
स्वार्थ के झोली में ।
धर्म, स्वयं धर्म के परिभाषा सुन के,
अकचका गइल बा,
जन-समुन्दर में कवनो स्खलन-कम्पन
पैदा नइखे करत !
शीलहरण भ्रष्टाचार आ वध
अब रोंआ खड़ा नइखे करत !
भाग-भाग दिनचर्या में
संवेदना उदास हो गइल बिया !
राजनीति में,
राज से नीति बलात्कृत हो गइल बिया !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आ बच गइल बा,
दलीय प्रजातंत्र के दलदल
भुइयाँ पर !
सत्ता पुरूष के अहं के पगचिन्ह
जे दे रहल बा 'मूक साक्षी'
सत्ती के श्राप से अभिशप्त
ई हिमालय के गोदी में
जनता के सर से उपर पानी हो गइल
बाकिर केनहू आर्तनाद आ विद्रोह नइखे
या
आर्तनाद सर्व नेपालीय
शन्ति रूपेण संस्थिता
नमस्तस्यै, नमस्तस्यै,
नमस्तस्यै नमोनमः ।

❑ ❑ ❑

दिनेश नेपाली

गजल

का करीं कि बँचल पानी रही,
जनमों जनम तक निशानी रही ।।

मरला पर थू-थू करे ना कोई,
हर पुस्तक में अमर कहानी रही ।।

सीता सावित्री के दिन चल गइल,
अब मरद के जइसन जनानी रही ।।

रोंआ एकोगो ना मुड़ी पर जानी,
बेटी जब ले घर में सयानी रही ।।

फरिश्ता ना तूँ इन्साने बनऽ,
काम करे में 'दिनेश' आसानी रही ।।

❑ ❑ ❑

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दीपनारायण मिश्र

ईमानदारी

देश के समाज के धर्म के ई प्रान ह
कुल रीत संस्कृति मनुष्यता के शान ह
आदर्श त्यागी लोग के धरा में ई प्रमान ह
इमान ई जहान में धर्म के बखान ह ॥

सत् इमान छोड़ के भला अउर ना कार बा
ईमानदारी ना रहल त सभ भइल बेकार बा

डिगरी हजार बा धनो बेशुमार बा
सुख के सामान से पूरन परिवार बा
भव्य भवन बाग बा टी० भी० फोन कार बा
बेंच के ईमान के भइल मालदार बा ।

प्रिय ना ऊ ईश के ओ लो के धिरकार बा
ईमानदारी ना रहल त सभ भइल बेकार बा ॥

जे चाहे काम कर सके अनेक भोग भोग सके
मेहर मतारी भाई से अपार प्यार मिल सके
जात भा समाज में सर्वोच्च केहु बन सके
पद दया गरीब पर जे कबो ना कर सके ।

ना भइल दानशीलता जे जीवन के सार ह
ईमानदारी ना रहल त सभ भइल बेकार ह ॥

ईमान यग्य दान ह इहे रहीम राम ह
ईमान से बढ़ के कवनो अउरो पुण्य काम ह
धर्म के ना आधार ह ई स्वर्ग के दुवार ह
जेमें ईमान बा भरल भवजाल से ऊ पार ह।

धन्य ह ऊ पुरुष जे सही में ईमानदार बा।
ईमानदारी ना रहल त सभ भइल बेकार बा।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मनुष्यता के छोड़ के खसोट लूट में परल
सम्पत्ति के लोभ में असत्य राह पर चलल
ई भेद मनुज दनुज में त्याग लोभ से बनल
प्रपंच लोभ द्वेष में सभे मनुज दनुज बनल ।

चेत चेत भाई आगे नाश के कगार बा
ईमानदारी ना रहल त सभ भइल बेकार बा ॥

केहू लाख अर्जले मगर हराम साथ ना चली
भोग ले हजार भोग देह आग में जरी
केहु ना हर सकी पिरा कुकृत्य के भोगे परी
केन्सर, टी० वी० भा एडस के प्रकोप देह पर परी

एही से देश वासी से अर्ज बार बार बा
ईमानदारी ना रहल त सभ भइल बेकार बा ॥

❑ ❑ ❑

भोजपुरी के चुनिन्दा हाइकु
(भोजपुरी के डेढ़ सौ हाइकुकारन के चुनिन्दा हाइकु के संग्रह)
दाम- पचास रुपया / सम्मेलन सदस्य खातिर पचीस रुपया
डाक खर्च अलग
प्रकाशक
अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन
इन्द्रपुरी, पटना-८०००२४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गोपाल अंश्क

(1)

शहीद के विधवा

जब हम
हर तिजहरिया
एगो
सूखल ठूँठ गाछ के छाँह में,
बइठ
आपन डेली में घास डालीं
इन्तजार में पथराइल आँख,
नदी के ओह पार
टिकाईं
आ
उखड़ल साँस के दम भरीं
तबे
एगो
गवरइया
हमर डेली पर बइठ
चोंच मार -मार के
चूँ - चूँ करे
आ हमरा
उनकर वापसी के उमेद बँध जाय
हिलोर मारे लागे
बाकिर
ठीक
ओही बेरा
हमरा माथा के ऊपर से
एगो
टिटिहिरी टी-टी टिरियात
गुजर जाय
मानी
हमर
आ
हमार तनहाई के
उपहास
उड़ा रहल होखे ।
हम
कइयन गो रात
एही सोच में
गुजार देलीं
कि जब
हमार दुःख में
गवरइया
शामिल होले
तबे टिटिहिरी
काहे
टिटियाला ?
आ -------
एकर राज
ओह बेरा
समझ में आइल
जब
हमार आदमी के
स्वतंत्रता-संग्राम के
अंतिम आ निर्णायक युद्ध के
अग्निकुण्ड में
होम हो जाए के
संवाद मिलल ।।
हम
शहीद के विधवा
गर्व से फूलल छाती

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खुशी से लोराइल आँख
ले के
ओही
सूखल ठूँठ गाछ के छाँह ओर दउड़लीं
अबरिया
हमार
आँख
नदी के एही पार
झुरमुट में अझुरा गइल
उनकर
वापसी के उमेद
मर गइल
आ पहिल बेर
हमार
सब कुछ जाए के गम भइल
तब
हम
चिपचिपाइल अँखियन के
धरती में गाड़ देलीं
आ
कँपकँपात ओठ से
थरथरात अंगुरियन से
धरती खँरोचे लगलीं
कि फाट जाय
हम सीता कहाईं
बाकिर
तबे
ऊ गवरइया
चीं-चीं करत
आइल,
ई का ?
ओकर चोंच
लहुलुहान रहे ।
ऊ एक बार
हमरो सामने
चीं-चीं कइलस
आ
निढाल हो गइल ।
हम हतप्रभ
देखते रह गइलीं
ऊ
पंख
फड़फड़ावत रह गइल,
कुछेके क्षण में
चीं चीं के आवाज
पवन में लय हो गइल,
ओकर
एह तरे के मरल
बुझउवल बन गइल
ऊ त
हमर सहेली बन गइल ।
गदबेर के
समय ले हो आईल
आजु
टिटिहिरी
ना आइल ।
आज टिटिहिरी के आवाज
ना सुनाई देलस ।।
हम समझ गइलीं
शिकारी के शिकार के बाद
जंगल में
ठहरे के
का
प्रयोजन ।

□ □ □

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(2)

टाट के आर-पार

अंगना के
बीचोबीच
घेराइल टाट के
छेदलसि
छोट - छोट अँगुरी,
बेंधलसि
मुलुर मुलुर
टुअर दुगो आँखि
टाट के पार से
टाट का काया के।
टाट के एहि पार
उदास,
सउँसे आँगन
का माया में,
एगो काया
चाची के,
आ चाची के देह
चउकठ पर
भहराइल
सँसरी टँगाइल
भकुआइल मुँह
सेउँठिआइल ओठ
आ
चिपचिपाइल आँखि
के समूचा भाव
टाट का पार
दूगो आँखि में समा गइल।

❑ ❑ ❑

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.